

5267



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

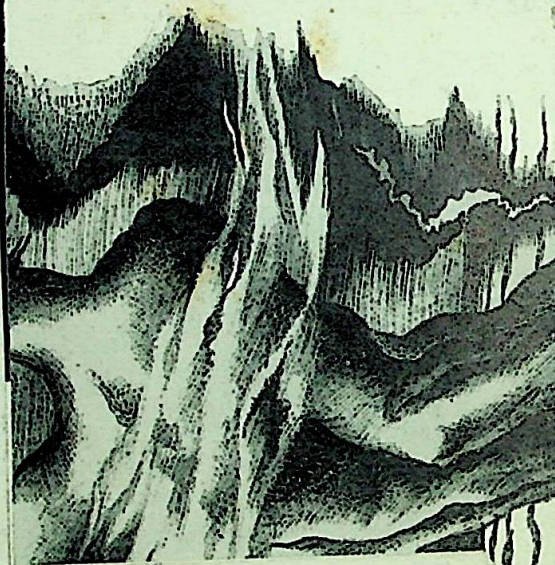
may the orphan gather all arms
what say you, Maryčka Magdonova

Maryčka, it's freezing and there's no
In the hills, in the hills there is no
Mayor Hochfelder watched you gallop
should he say nothing, Maryčka M

What man have you taken to be your
Bayonet over shoulder, helmet and
stern his looks, and you follow him
will you go with him, Maryčka M

You a bride? Bowed is your head,
over your eyes the kerchief wet
with your tears bitter and burning,
what is it, Maryčka Magdonova?

The rich men of Frýdek, the ladies of Frýdek
will laugh at you with malice and scorn,
Mayor Hochfelder will watch from his window.



जैनपदसंग्रह

तृतीय भाग ।

5267



प्रकाशक

जैन ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय ।



5267

श्रीवीतरागाय नमः ।

जैनपदसंग्रह

तृतीय भाग ।

अर्थात्

अगरा निवासी कविवर भूधरदासजी कृत

पदविनतियोंका संग्रह ।

जिसे

श्रीजैन ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालयके मालिकने

बम्बईके

नेटिव ओपिनियनप्रेसमें वि. वा. परांजपेके

प्रबंधसे छपाया ।

भाद्रपद वि० सं० १९८३ ।

द्वितीयावृत्ति]

*

[मूल्य पाँच आने ।

प्रकाशक

छगनमल बाकलीवाल

मालिक.

जैन ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,

हीराबाग, पो० गिरगांव-बम्बई ।



मुद्रक—

विनायक बा. परांजपे,

नेटिव ओपिनियन प्रेस,

गिरगांव-बैकरोड, मुंबई.

पदोंकी वर्णानुक्रमणिका ।

पद संख्या

पद संख्या

अजित जिन विनती हमारी	४१
अजित जिनेसुर अग्रहरणं	२
अन्तर उज्जल करना रे भाई	३६
अब नित नेमि नाम भजौ	५४
अब पूरीकर नींदड़ी सुन जीया रे	३३
अब मन मेरे वे, सुनि सुनि सीख सयानी ७०	
अब मेरें समकित सावन-आयो १९	
अरज करै राजुल नारी	२८
अरै मन चले, श्रीहथिनापुरकी जात ५७	
अरै ! हां चेतो रे भाई	६०
अहो ! जगतगुरु एक, सुनिबो ७६	
अज्ञानी पाप धतूरा न बोय	५
आज गिरिराजके शिखर सुंदर सखी ३१	
आदि पुरुष मेरी आस भरोजी	४९
आया रे बुढ़ापा मानी सुधि बुधि	३५
आरती आदि जिनिंद तुम्हारी	६८
एजी मोहि तारिये शान्ति जिनिंद	३९
ऐसी समझके सिर धूल	३२
ऐसो श्रावक कुल तुम पाय	६४
और सब थोथी बातें	४०
करुणा ल्यो जिनराज हमारी, करुणा ७९	
काया गागरि जोजरी, तुम देखो ५५	
गरब नहिं कीजै रे, ऐ नर निपट गैवार १२	
चरखा चलता नाहीं, चरखा हुआ ६७	
चिन्त चेतनकी यह विरियाँ रे	३०
जगत जन जूवा हारि चले	५८
जगमें जीवन थोरा, रे अज्ञानी	११

जगमें श्रद्धानी जीव जीवनमुक्त	३४
जपि माला जिनवर नामकी	४४
जिनराज चरन मन मति बिसरै	१७
जिनराज ना बिसारो	१६
जीवदया व्रत तरु बड़ो	६३
जै जगपूज परमगुरु नामी	७४
तहाँ लै चल री ! जहाँ जादोपति प्यारो ५९	
तुम तरन तारन भवनिवारन	७२
तुम सुनियो साथो ! मनुवा मेरा ज्ञानी ५०	
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव ७७	
त्रिभुवनगुरु स्वामी जी	७५
थांकी कथनी म्हाँ प्यारी लगे जी १३	
नेमि बिना न रहै मेरो जियरा	२१
नैननिको वान परी, दरसनकी	६५
देखे देखे जगतके देव	२६
दंखो गरबगहेली री हेली	२७
देखो भाई ! आतम देव विराजै	५३
देख्यो री ! कहीं नेमिकुमार	१५
प्रभु गुन गायरे, यह औसर फेर न ५१	
पारस-पद-नख-प्रकाश, अरुन वरन ४७	
पुलकन्त नयन चकोरपक्षी	७१
बन्दौ दिगम्बरगुरुचरन	७३
भगवन्तभजन क्यों भूला रे	२०
भलो चेत्यो वीर नर तू	७
भवि देखि छबी भगवानकी	१८
मन मूरख पंथी, उस मारग मति जाय २२	
मनहंस ! हमारी लौ शिक्षा हितकारी ३८	

पद संख्या.		पद संख्या.
मा विलंब न लाव पठाव तहाँ री	१४	शेष सुरेश नरेश-रतें तोहि ४८
मेरी जाम आठौं जाम	२५	श्रीगुरु शिक्षा देत हैं. सुनि प्राणी रे ७८
मेरें चारों शरन सहार्ई	४३	सब विधि करन उतावला २३
मेरे मन सूवा, जिनपद	६	सीमंधर स्वामी, मैं चरननका चेरा ३.
मैं तो थांकी आज महिमा जानी	५६	सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख सयानी ८
यह तन जंगम रूखड़ा सुनियो भवि	६६	सुनि ठगनी माया, तैं सब जग ठग ९
रखता नहीं तनकी खबर, अनहद	८०	सुनि सुजान ! पाँचों रिपु वशकरि ५२
रटि रसना मेरी ऋषभ जिनंद	२४	सुनि सुनि हे साधनि ! म्हारे मनकी ६९.
वा पुरके बाणें जाऊं	४	सो गुरुदेव हमारा है साधो ६१
वीरा ! थारी वान बुरी परी रे	३७	सो मत सांचो है मन मेरे ४२
वे कोई अजब तमासा	१०	स्वामीजी सांची सरन तुम्हारी ६२
वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी	४५	हूं तो कहा करूं कित जाऊं २९
लगी लो नाभिनंदनसों.	१	होरी खेलौंगी घर आये चिदानंदकन्त ४६



श्रीजिनाय नमः ।

जैन पदसंग्रह ।

तृतीयभाग ।

अर्थात्

कविवर भूधरदासजीकृत भजनोंका संग्रह ।

१. राग सोरठ ।

लगी लो नाभिनंदनसों । जपत जेम चकोर
चकई, चन्द भरताकों ॥ लगी लो० ॥ १ ॥
जाउ तन धन जाउ जोवन, प्राण जाउ न क्यों ।
एक प्रभुकी भक्ति मेरे, रहो ज्योंकी त्यों ॥ लगी
लो० ॥ २ ॥ और देव अनेक सेये, कछु न पायो
हों । ज्ञान खोयो गांठिको, धन करत कुंवनिज
ज्यों ॥ लगी लो० ॥ ३ ॥ पुत्र मित्र कलत्र ये सब
सगे अपनी गों । नरककूपउद्धरन श्रीजिन,
समझ भूधर यों ॥ लगी लो० ॥ ४ ॥

१. बुरा व्यापार । २. गरज ।

२. राग गौरी ।

अजितजिनेसुर अघहरणं । अघहरणं अ-
 शरणशरणं ॥ टेक ॥ निरखत नैन तनक
 नहिं त्रपते, आनंदजनक कनकवरणं ॥ अ-
 जित० ॥ १ ॥ करुना भीजे वायक जिनके, गण-
 नायक उर आभरणं । मोह महारिपु धायक,
 सौयक, सुखदायक दुखछयकरणं ॥ अजित०
 ॥ २ ॥ परमात्म प्रभु पतितउधारन, वारणल-
 च्छन पगधरणं । मैनमथमारण विपतिविदारण,
 शिवकारण तारण तरणं ॥ अजित० ॥ ३ ॥
 भवआतापनिकन्दन चन्दन, जगवन्दन वांछा-
 भरणं । जय जिनराज जगत वंदत जस, जन
 भूधर वंदत चरणं ॥ अजित० ॥ ४ ॥

३. राग काफ़ी ।

सीमंधरस्वामी, मैं चरननका चेरा ॥ टेक ॥
 इस संसार असारमें कोई, और न रँच्छक मेरा
 ॥ सीमंधर० ॥ १ ॥ लख चौरासी जोनिमें मैं, फिरि

१ वचन । २ नाश करनेवाला । ३ वाण । ४ हाथीका चिह्न ।
 ५ काम । ६ रक्षक ।

फिरि कीनों फेरा । तुम महिमा जानी नहीं प्रभु,
 देख्या दुःख धनेरा ॥ सीमंधर० ॥ २ ॥ भाग उदयतैं
 पाइया अब, कीजै नाथ निबेरा । बेगि दया
 करि दीजिये मुझे, अविचलथान बसेरा ॥ सीमं-
 धर० ॥ ३ ॥ नाम लिये अघ ना रहै ज्यों, ऊगे
 भान अँधेरा । भूधर चिन्ता क्या रही ऐसा,
 समरथ साहिब तेरा ॥ सीमंधर० ॥ ४ ॥

४. राग सोरठ ।

वा पुरके वारणैं जाऊं ॥ टेक ॥ जम्बूद्वीप
 विदेहमें, पूरव दिश सोहै हो । पुंडरीकिनी नाम
 है, नर सुर मन मोहै हो ॥ वा पुर० ॥ १ ॥ सीमं-
 धर शिवके धनी, जहँ आप विराजै हो । बारह
 गण विच पीठपै, शोभानिधि छाजै हो ॥ वा
 पुर० ॥ २ ॥ तीन छत्र मांथैं दिपैं, वर चामर
 बीजै हो । कोटिक रँतिपति रूपपै, न्यौछावर
 कीजै हो ॥ वा पुर० ॥ ३ ॥ निरखंत विरख अशो-

१ अपार । २ मोक्ष । ३ पाप । ४ दरवाजे । ५ मस्तकपर ।
 ६ दुरता है । ७ कामदेव । ८ वृक्ष ।

कको, शोकावलि भाजै हो । वानी वरसै अमृत
 सी, जलधर ज्यों गाजै हो ॥ वा पुर० ॥ ४ ॥
 वरसै सुमनसुहावनै, सुरदुंदभि गाजै हो । प्रभु
 तन तेजसमूहसौं, ससि सूरज लाजै हो ॥ वा
 पुर० ॥ ५ ॥ समोसरन विधि वरनतैं, बुधि
 वरन न पावै हो । सब लोकोत्तर लच्छमी, देखें
 वनि आवै हो ॥ वा पुर० ॥ ६ ॥ सुरनर मिलि
 आवैं सदा, सेवा अनुरागी हो । प्रकट निहारैं
 नाथकों, धनि वे बड़भागी हो । वा पुर० ॥ ७ ॥
 भूधर विधिसौं भावसौं, दीनी त्रय फेरी हो ।
 जैवन्ती वरतो सदा, नगरी जिनकेरी हो ॥
 वा पुर० ॥ ८ ॥

५. राग सोरठ ।

अज्ञानी पाप धतूरा न बोय ॥ टेक ॥ फल
 चाखनकी बार भरै दृग, मर है मूरख रोय ॥
 अज्ञानी० ॥ १ ॥ किंचित् विषयनिके सुख
 कारण, दुर्लभ देह न खोय । ऐसा अवसर फिर
 न मिलैगा, इस नींदड़ी न सोय ॥ अज्ञानी० ॥

१ समुद्र । २ पुष्प । ३ चन्द्र ।

तृतीयभाग ।

६

॥ २ ॥ इस विरियाँमें धर्म-कल्प-तरु, सींचत
स्यानै लोय । तू विष बोवन लागत तो सम,
और अभागा कोय ॥ अज्ञानी० ॥ ३ ॥ जे
जगमें दुखदायक बेरस, इसहीके फल सोय ।
यों मन भूधर जानिकै भाई, फिर क्यों भोंदू
होय ॥ अज्ञानी० ॥ ४ ॥

६. राग सोरठ ।

मेरे मन सूवा, जिनपद पींजरे वसि, यार लाव
न बार रे ॥ टेक ॥ संसारसेवलवृच्छ सेवत,
गयो काल अपार रे । विषय फल तिस तोड़ि
चाखे, कहा देख्यौ सार रे ॥ मेरे मन० ॥ १ ॥
तू क्यों निचिन्तो सदा तोकों, तकत काल
भँजार रे । दावै अचानक आन तब तुझे, कौन
लेय उबार रे ॥ मेरे मन० ॥ २ ॥ तू फँस्यो कर्म
कुफन्द भाई, छुटै कौन प्रकार रे । तैं मोह-पंछी-
बधक-विद्या, लखी नाहिं गँवार रे ॥ मेरे मन० ॥
॥ ३ ॥ है अजौ एक उपाय भूधर, छुटै जो

१ बेला-समय । २ विवेकी । ३ लोग । ४ निश्चिन्त । ५ बिछी ।

नर धार रे । रटि नाम राजुलरमनको, पंशुबंध
छोड़नहार रे ॥ मेरे मन० ॥ ४ ॥

७. राग सोरठ ।

भलो चेत्यो वीर नर तू, भलो चेत्यो वीर
॥ टेक ॥ समुझि प्रभुके शरण आयो, मिल्यो
ज्ञान वजीर ॥ भलो० ॥ १ ॥ जगतमें यह
जनम हीरा, फिर कहां थो धीर । भली वार
विचार छाँड़्यो, कुमति कामिनि सीरं ॥ भलो०
॥ २ ॥ धन्य धन्य दयाल श्रीगुरु, सुमरि
गुणगंभीर । नरक परतैं राखि लीनों, बहुत
कीनी भीरं ॥ भलो० ॥ ३ ॥ भक्ति नौका लहीं
भागनि, कितैक भवदधिनीर । ढील अब क्यों
करत भूधर, पहुँच पैली तीर ॥ भलो० ॥ ४ ॥

८. राग सोरठ ।

सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख सयानी ॥
टेक ॥ नरभव पाय विषय मति सेवो, ये दुर-
गति अगवानी ॥ सुन० ॥ १ ॥ यह भव कुल
यह तेरी महिमा, फिर समझी जिनवानी ॥

• १ साँझा । २ सहाय । ३ कितना ।

इस अंवसरमें यह चपलाई, कौन समझ उर
 आनी ॥ सुन० ॥ २ ॥ चंदन काठ-कनकके भा-
 जन, भरि गंगाका पानी । तिल खलि राँधत
 मंदमती जो, तुझ क्या रीस बिरानी ॥ सुन०
 ॥ ३ ॥ भूधर जो कथनी सो करनी, यह बुधि
 है सुखदानी । ज्यों मशालची आप न देखै,
 सो मति करै कहानी ॥ सुनि० ॥

९. राग सोरठ ।

सुनि ठगनी माया, तैं सब जग ठग खाया ॥
 टेक ॥ टुक विश्वास किया जिन तेरा, सो मूरख
 पिछताया ॥ सुनि० ॥ १ ॥ आपा तनक दिखाय
 बीजं ज्यों, मूढमती ललचाया । करि मद अंध
 धर्म हर लीनों, अंत नरक पहुँचाया ॥ सुनि० ॥ २ ॥
 केते कंथ किये तैं कुलटा, तो भी मन न अघा-
 या । किसहीसों नहिं प्रीति निबाही, वह तजि
 और लुभाया ॥ सुनि० ॥ ३ ॥ भूधर छलत फिरै यह
 सबकों, भौंदू करि जग पाया । जो इस ठगनीकों
 ठग बैठे, मैं तिसको सिर नाया ॥ सुनि० ॥ ४ ॥

१ बिजलीके समान ।

१०.

वे कोई अजब तमासा, देख्या बीच जहान
 वे, जोर तमासा सुपनेकासा ॥ टेक ॥ एकौकै
 घर, मंगल गावैं, पूंगी मनकी आसा । एक वि-
 योग भरे बहु रोवैं, भरि भरि नैन निरासा ॥
 वे कोई० ॥ १ ॥ तेज तुरंगनिपै चढ़ि चलते,
 पहिरैं मलमल खासा । रंक भये नागे अति डोलैं,
 ना कोई देय दिलासा ॥ वे कोई० ॥ २ ॥ तैरकै
 राज तखतपर बैठा, था खुशवक्त खुलासा ।
 ठीक दुपहरी मुदत आई, जंगल कीना वासा ॥
 वे कोई० ॥ ३ ॥ तन धन अथिर निहायत जगमें,
 पानीमाहिं पतासा । भूधर इनका गरब करै जे,
 फिट्तिनका जनमासा ॥ वे कोई० ॥ ४ ॥

११. राग ख्याल ।

जगमें जीवन थोरा, रे अज्ञानी जागि ॥ टेक ॥
 जनम ताड़ तरुतैं पड़ै, फल संसारी जीव । मौत
 महीमें आय हैं, और न ठौर सदीव ॥ जगमें०

१. पूरी हुई । २. धीरज । ३. सबरे । ४. सिंहासन । ५. सर्वथा ।
 ६. धिक् । ७. मनुष्यजन्म ।

॥ १ ॥ गिर-सिर दिवला जोइया, चहुँदिशि
 वाजै पौन । बलत अचंभा मानिया, बुझत अ-
 चंभा कौन ॥ जगमें० ॥ २ ॥ जो छिन जाय सो
 आयुमें, निशि दिन दूकै काल । बांधि सकै तो
 है भला, पानी पहिली पाल ॥ जगमें० ॥ ३ ॥ मनुष-
 देह दुर्लभ्य है, मति चूकै यह दाव । भूधर राजुल-
 कंतकी, शरण सिताबी आव ॥ जगमें० ॥ ४ ॥

१२. राग ख्याल ।

गरव नहिं कीजै रे, ऐ नर निपट गँवार ॥
 टेक ॥ झूठी काया झूठी माया, छाया ज्यों लखि
 लीजै रे ॥ गरव० ॥ १ ॥ कै छिन सांझ सुहागरु
 जोबन, कै दिन जगमें जीजै रे ॥ गरव० ॥ २ ॥
 बेगा चेत विलम्ब तजो नर, बंध बढै तिथि छीजै
 रे ॥ गरव० ॥ ३ ॥ भूधर पुलपल हो है भारी,
 ज्यों ज्यों कमरी भीजै रे ॥ गरव० ॥ ४ ॥

१३. राग ख्याल ।

थांकी कथनी म्हांनै प्यारी लगै जी, प्यारी

१ दीपक । २ चले । ३ निकट आवे । ४ श्रीनेमिनाथकी ।
 ५ जीवेंगे । ६ जल्दी । ७ आयु ।

लमै म्हांरी भूल भगै जी ॥ टेक ॥ तुमहित हांक
 विना हो श्रीगुरु, सूतो जियरो काई जगै जी ॥
 थांकी० ॥ १ ॥ मोहनिधूलि मेलि म्हारे मांथै,
 तीन रतन म्हांरा मोह ठगै जी । तुम पद ठो-
 कैंत सीस झरी रज, अब ठगको कर नाहिं वगै
 जी ॥ थांकी० ॥ २ ॥ दूख्यो चिर मिथ्यात महा-
 ज्वर, भांगां मिल गया वैद मंगै जी । अंतर
 अरुचि मिटी मम आतम, अब अपने निजदर्ब
 पगै जी ॥ थांकी० ॥ ३ ॥ भव वन भ्रमत बड़ी
 तिसना तिस, क्योंहि बुझै नहिं हिर्यरा दंगै जी ।
 भूधर गुरुउपदेशामृतरस, शान्तमई आनंद
 उमगै जी ॥ थांकी० ॥ ४ ॥

१४. राग खयाल ।

मा विलंब न लाँव पँठाव तँहाँ री, जहँ जग-
 पति पिय प्यारो ॥ टेक ॥ और न मोहि सुहाय
 कछू अब, दीसै जगत अँधारो री ॥ मा विलंब०

१ कैसे । २ मेरे । ३ सिंघर । ४ मेरा । ५ प्रणाम करनेसे ।
 ६ भाग्यसे । ७ मार्गमें । ८ हृदय । ९ जलता है । १० कर ।
 ११ भेज दे । १२ उसी जगह ।

॥ १ ॥ मैं श्रीनेमिदिवाकरको कब, देखों वदन
 उजारो । विन देखैं मुरझाय रह्यो है, उर अरविदं
 हमारो री ! ॥ मा विलंब० ॥ २ ॥ तन छाया ज्यों
 संग रहौंगी, वे छांड़हिं तो छांरो । विन अपराध
 दंड मोहि दीनो, कहा चलै मेरो चारो ॥ मा
 विलंब० ॥ ३ ॥ इहि विधि रागउदय राजुलनै,
 सह्यो विरह दुख भारो । पीछैं ज्ञानभान बल
 विनश्यो, मोह महातम कारो री ॥ मा विलंब०
 ॥ ४ ॥ पियके पैँडे पैँडौ कीनों, देखि अथिर
 जग सारो । भूधरके प्रभु नेमि पियासों, पाल्यौ
 नेह करारो री ॥ मा विलंब० ॥ ५ ॥

१५. राग ख्याल ।

देख्यो री ! कहीं नेमिकुमार ॥ टेक ॥ नैननि
 प्यारो नाथ हमारो, प्रानजीवन प्रानन आधार ॥
 देख्यो० ॥ १ ॥ पीव वियोग विथा बहु पीरी,
 पीरी भई हलदी उँनहार । होउं हरी तबही जब
 भेटौं, श्यामवरन सुंदर भरतार ॥ देख्यो० ॥ २ ॥

१ सूरज । २ कमल । ३ सूर्य । ४ पीड़ा की । ५ पीली ।
 ६ समान ।

विरह नदी असराल बहै उर, बूझत हों वामें
निरंधार । भूधर प्रभु पिय खेवटिया विन, सम-
रथ कौन उतारनहार ॥ देख्यो० ॥ ३ ॥

१६. राग पंचम ।

जिनराज ना विसारो, मति जन्म वादि
हारो ॥ टेक ॥ नर भौ आसान नाहीं, देखो
सोच समझ वारो ॥ जिनराज० ॥ १ ॥ सुत
मात तात तरुनी, इनसों ममत निवारो । सबही
सगे गरजके दुखसीर नहिं निहारो ॥ जिनराज०
॥ २ ॥ जे खाँयँ लाभ सब मिलि, दुर्गतमें तुम
सिधारो । नटका कुटुंब जैसा, यह खेल यों
विचारो ॥ जिनराज० ॥ ३ ॥ नाहक पराये
काजैं, आपा नरकमें पारो । भूधर न भूल जगमें,
जाहिर दगा है यारो ॥ जिनराज० ॥ ४ ॥

१७. राग नट ।

जिनराज चरन मन मति बिसरै ॥ टेक ॥ को
जानैं किहिँ बार कालकी, धार अचानक आनि

१ अथाह । २ निराधार । ३ वृथा खोजो । ४ सहज । ५ स्त्री ।
६ वृथा । ७ समय । ८ घाड़ ।

परै ॥ जिनराज० ॥ १ ॥ देखत दुख भजि जाहिं
 दशौं दिश, पूजत पातकपुंज गिरै । इस संसार
 क्षारसागरसौं, और न कोई पार करै ॥ जिन-
 राज० ॥ २ ॥ इक चित ध्यावत वांछित पावत,
 आवत मंगल विघन टरै । मोहनि धूलि परी
 माथैं चिर, सिर नावत ततकाल झरै ॥ जिन-
 राज० ॥ ३ ॥ तबलौं भजन सँवार सयानै, जबलौं
 कफ नहिं कंठ अरै । अगनि प्रवेश भयो घर
 भूधर, खोदत कूप न काज सरै ॥ जिनराज० ॥ ४ ॥

१८. राग सारंग ।

भवि देखि छबी भगवानकी ॥ टेक ॥ सुंदर
 सहज सोम आनँदमय, दाता परम कल्याणकी ॥
 भविः ॥ १ ॥ नासादृष्टि मुदित मुखवारिज, सीमा
 सब उपमानकी । अंग अडोल अचल आसन दिढ़,
 वही दशा निज ध्यानकी ॥ २ ॥ इस जोगासन
 जोगरीतिसौं, सिद्ध भई शिवथानकी । ऐसैं
 प्रगट दिखावै मारग, मुद्रा धात पखानकी ॥

१ प्रसन्न । २ कमल ।

भवि० ॥३॥ जिस देखें देखन अभिलाषा, रहत
न रंचक आनकी । तृपत होत भूधर जो अब
ये, अंजुलि अमृतपानकी ॥ भवि० ॥ ४ ॥

१९. राग मलार ।

अब मेरैं समकित सावन आयो ॥ टेक ॥
बीति कुरीति मिथ्यामति ग्रीषम, पावस सहज
सुहायो ॥ अब मेरैं० ॥ १ ॥ अनुभव दामिनि दमकन
लागी, सुरति घटा धन छायो । बोलै विमल
विवेक पपीहा, सुमति सुहागिन भायो ॥ अब
मेरैं० ॥ २ ॥ गुरुधुनि गरज सुनत सुख उपजै,
मोर सुमन विहसायो । साधक भाव अँकूर उठे
बहु, जित तित हरष संवायो ॥ अब मेरैं० ॥ ३ ॥
भूल धूल कहिं मूल न सूझत, समरस जल झर
लायों । भूधर को निकसै अब बाहिर, निज
निरैचू घर पायो ॥ अब मेरैं० ॥ ४ ॥

२०. राग सोरठ ।

भगवन्तभजन क्यों भूला रे ॥ टेक ॥ यह

१ अन्यकी । २ वर्षाकृत । ३ बिजुली । ४ मेघ । ५ जिसमें पानी नहीं चूता है ।

संसार रैनका सुपना, तन धन वारि-बबूला रे ॥
 भगवन्त० ॥ १ ॥ इस जोवनका कौन भरोसा;
 पावकमें तृणपूला रे ! । काल कुदार लिये सिर
 ठाड़ा, क्या समझै मन फूला रे ! ॥ भगवन्त०
 ॥ २ ॥ स्वारथ साधै पाँच पाँव तू, परमारथकों
 लूला रे ! । कहु कैसें सुख पैहै प्राणी, काम करै
 दुखमूला रे ॥ भगवन्त० ॥ ३ ॥ मोह पिशाच
 छल्यो मति मारै, निज कर कंध वसूला रे ।
 भज श्रीराजमतीवर भूधर, दो दुरमति सिर
 धूला रे ॥ भगवन्त० ॥ ४ ॥

२१. राग विहागरो ।

नेमि विना न रहै मेरो जियरा ॥ टेक ॥ हेर
 री हेली तपत उर कैसो, लावत क्यों निज हाथ
 न निर्यरा ॥ नेमि विना० ॥ १ ॥ करि करि दूर
 कपूर कमल दल, लगत करूर कंलाधर सियरा ॥

१ जलका । २ बुदबुदा । ३ घासका पूला । ४ लँगड़ा । ५ नेमिनाथ ।
 ६ देख री । ७ सहेली-सखी । ८ निकट । ९ क्रूर । १० चंद्र ।
 ११ शोतल ।

नेमि विना० ॥ २ ॥ भूधर के प्रभु नेमि पिया विन,
शीतल होय न राजुल हियरा ॥ नेमि विना० ॥ ३ ॥

२२. राग खयाल ।

मन मूरख पंथी, उस मारग मति जाय रे
॥ टेक ॥ कामिनि तन कांतार जहां है, कुच परवत
दुखदाय रे ॥ मन मूरख० ॥ १ ॥ काम किरात
बसै तिह थानक, सरवस लेत छिनाय रे । खाय
खता कीचकसे बैठे, अरु रावनसे राय रे ॥ मन
मूरख० ॥ २ ॥ और अनेक लुटे इस पैड़े,
वरनैं कौन बढ़ाय रे । वरजत हों वरज्यौ रह
भाई, जानि दगा मति खाय रे ॥ मन मूरख०
॥ ३ ॥ सुगुरु दयाल दया करि भूधर, सीख कहत
समझाय रे । आगैं जो भावै करि सोई, दीनी
बात जताय रे ॥ मन मूरख० ॥ ४ ॥

२३. राग विलावल ।

सब विधि करन उँतावला, सुमरनकौं सीरौ
॥ टेक ॥ सुख चाहै संसारमैं, यों होय न नीरा ॥

१ वन । २ भील । ३ स्थानमें । ४ धोखा । ५ रास्ते । ६ जल्दबाज ।
७ ठंडा-सुस्त ।

सब विधि० ॥ १ ॥ जैसे कर्म कमाय है, सो ही
फल वीरा ! । आम न लागै आंकके, नग होय
न हीरा ॥ सब विधि० ॥ २ ॥ जैसा विषयनिकों
चहै, न रहै छिन धीरा । त्यों भूधर प्रभुकों जपै,
पहुँचै भवतीरा ॥ सब विधि० ॥ ३ ॥

२४. राग बिलावल ।

रटि रसना मेरी ऋषभ जिनन्द, सुर नर
जच्छ चकोरन चन्द ॥ टेक ॥ नामी नाभि नृप-
तिके बाल, मरुदेवीके कँवर कृपाल ॥ रटि०
॥ १ ॥ पूज्य प्रजापति पुरुष पुरान, केवल
किरन धरै जगभान ॥ रटि० ॥ २ ॥ नरकनि-
वारन विरद विख्यात, तारन तरन जगतके
तात ॥ रटि० ॥ ३ ॥ भूधर भजन किये निरबाह,
श्रीपद-पदम भँवर हो जाह ॥ रटि० ॥ ४ ॥

२५. राग गौरी ।

मेरी जीभ आठौं जाम, जपि जपि ऋषभ-
जिनिंदजीका नाम ॥ टेक ॥ नगर अजुध्या उत्तम
ठाम, जनमें नाभि नृपतिके धाम ॥ मेरी० ॥ १ ॥
सहस अठोत्तर अति अभिराम, लसत सुलच्छन

२ भाग ३

लाजत काम ॥ मेरी० ॥ २ ॥ करि थुति गान
थके हरि राम, गनि न सके गणधर गुनग्राम ॥
मेरी० ॥ ३ ॥ भूधर सार भजन परिनाम, अर
सब खेल खेलके खांम (?) ॥ मेरी० ॥ ४ ॥

२६. राग धमाल । ✓

देखे देखे जगतके देव, राग रिसंसौं भरे ॥
टेक ॥ काहूके सँग कामिनि कोऊ आयुधवाँन
खरे ॥ देखे० ॥ १ ॥ अपने औगुन आपही हो,
प्रकट करैं उधरे । तऊ अबूझ न बूझहिं देखो,
जन मृग भोरैप रे ॥ देखे० ॥ २ ॥ आप भि-
खारी है किनही हो, काके दलिद हरे । चढ़ि
पाथरकी नावपै कोई, सुनिये नाहिं तरे ॥ देखे०
॥ ३ ॥ गुन अनन्त जा देवमैं औ, ठारह दोष
टरे । भूधर ता प्रति भावसौं दोऊ, कर निज
सीस धरे ॥ देखे० ॥ ४ ॥

२७

देखो गरबगहेली री हेली ! जादोंपतिकी
नारी ॥ टेक ॥ कहां नेमि नायक निज मुखसौं,

१ द्वेषसे । २ मोहापन ।

टहल कहै बड़भागी । तहां गुमान कियो मति-
 हीनी, सुनि उर दौसी' लागी ॥ देखो० ॥ १ ॥
 जाकी चरण घूलिको तरसैं, इन्द्रादिक अनु-
 रागी । ता प्रभुको तन-वैसन न पीड़ै,^१ हा ! हा !
 परम अभागी ॥ देखो० ॥ २ ॥ कोटि जनम
 अधभंजन जाके, नामतनी बलि जइये । श्रीहैं-
 रिवंशतिलक तिस सेवा, भाग्य विना क्यों पइये ॥
 देखो० ॥ ३ ॥ धनि वह देश धन्य वह धरनी,
 जगमें तीरथ सोई । भूधरके प्रभु नेमि नवल
 निज, चरन धरैं जहाँ दोई ॥ देखो० ॥ ४ ॥

२८. राग धमाल सारंग ।

अरज करै राजुल नारी, वनवासी पिया तुम
 क्यों छँरी ? ॥ टेक ॥ प्रभु तो परम दयाल सब-
 निपै, सबहीके हितकारी । मोपै कठिन भये क्यों
 साजन !, कहिये चूक हमारी ॥ अरज० ॥ १ ॥
 अब ही भोग-जोग हो बालम, यह बुधि कौन
 विचारी । आगैं ऋषभदेवजी व्याही, कच्छ-

१ चाकरी; वस्त्र निचोड़नेके लिए । २ दावागिरी । ३ धोती ।
 ४ निचोड़ै । ५ श्रीनेमिनाथ ।

सुकच्छकुमारी । सोई पंथ गहो पिय पाछैं, हूजौ
 संजमधारी ॥ अरज० ॥ २ ॥ तुम विन एक
 पलक जो प्रीतम, जाय पहर सौ भारी । कैसें
 निशदिन भरौं नेमिजी !, तुम तो ममता डारी ।
 याको ज्वाब देहु निरमोही !, तुम जीते मैं
 हारी ॥ अरज० ॥ ३ ॥ देखो रैनवियोगिनि
 चकई, सो विलखै निशि सारी । आश बाँधि
 अपनो जिय राखै, प्रात मिलैं पिय प्यारी । मैं
 निराश निरधारिनि कैसें, जीवों अती दुखारी ॥
 अरज० ॥ ४ ॥ इह विधि विरह नदीमें व्याकुल,
 उग्रसेनकी बारी । धनि धनि समुद्रविजयके
 नंदन, बूड़त पार उत्तारी । करहु दयाल दया
 ऐसी ही, भूधर शरन तुम्हारी ॥ अरज० ॥ ५ ॥

२९. राग धमाल सारंग ।

हूं तो कहा करूं कित जाउं, सखी अब
 कासौं पीर कहूं री ! ॥ टेक ॥ सुमति सती सखि-
 यनिके आगैं, पियके दुख परकासै । चिदानन्द-
 वल्लभकी वनिता, विरह वचन मुख भासै ॥ हूं
 तो० ॥ १ ॥ कंत विना कितने दिन बीते, कौलों

धीर धरौं री । पर घर हँडै निज घर छाँडै,
 कैसी विपति भरौं री ॥ हूँ तो० ॥ २ ॥ कहत
 कहावतमें सब यों ही, वे नायक हम नारी । पै
 सुपनै न कभी मुँह बोले, हमसी कौन दुखारी ॥
 हूँ तो० ॥ ३ ॥ जइयो नाश कुमति कुलटाको,
 विरमायो पति प्यारो । हमसौं विरचि रच्यो
 रँग बाके, असमझ (?) नाहिं हमारो ॥ हूँ तो०
 ॥ ४ ॥ सुंदर सुघर कुलीन नारि मैं, क्यों प्रभु
 मोहि न लोरें । सत हूँ देखि दया न धरें चित,
 चेरीसों हित जोरें ॥ हूँ तो० ॥ ५ ॥ अपने
 गुनकी आप बड़ाई, कहत न शोभा लहिये ।
 ऐरी ! वीर चतुर चेतनकी, चतुराई लखि
 कहिये ॥ हूँ तो० ॥ ६ ॥ करिहौं आजि अरज
 जिनजीसों, प्रीतमको समझावैं । भरतां भीख
 दई गुन मानौं, जो बालम घर आवैं ॥ हूँ तो०
 ॥ ७ ॥ सुमति वधू यों दीन दुहागनि, दिन
 दिन झुरत निरासा । भूधर पीउ प्रसन्न भये
 विन, वसै न तिय घरवासा ॥ हूँ तो० ॥ ८ ॥

१ भटके । २ प्रेम करें ।

३०. राग सौरठ ।

चित ! चेतनकी यह विरियाँ रे ॥ टेक ॥
 उत्तम जनम सुतन तरुनापौ, सुकृत बेल फल
 फरियाँ रे ॥ चित० ॥ १ ॥ लहि सत संगतिसौं सब
 समझी, करनी खोटी खरियाँ रे । सुहित सँभा-
 लि शिथिलता तजिकै, जाहैं बेली झरियाँ रे ॥
 चित० ॥ २ ॥ दल बल चहल महल रूपेका, अर
 कंचनकी कलियाँ रे । ऐसी विभव बढ़ी कै बढ़ि
 है, तेरी गरज क्या सरियाँ रे ॥ चित० ॥ ३ ॥
 खोय न वीर विषय खल साँटै, ये कोरनकी
 धरियाँ रे । तोरि न तनक तँगाहित भूधर,
 मुकताफलकी लरियाँ रे ॥ चित० ॥ ४ ॥

३१. राग पंचम ।

आज गिरिराजके शिखर सुंदर सखी, होत है
 अतुल कौतुक महा मनहरन ॥ टेक ॥ नाभिके
 नंदकों जगतके चन्दकों, ले गये इन्द्र मिलि जन्म-
 मंगल करन ॥ आज० ॥ १ ॥ हाथ हाथन धरे सुरन

१ जवानी । २ पुण्य । ३ बदलेमें । ४ करोड़ोंकी । ५ धागा. डोराके
 लिए । ६ लड़ी ।

कंचन धरे, छीरसागर भरे नीर निरमल वरन ।
 सहस अर आठ गिन एक ही वार जिन, सीस
 सुरईशके करन लागे ढरन ॥ आज० ॥ २ ॥
 नचत सुरसुन्दरीं रहस रससौं भरीं, गीत गावैं
 अरी दैहिं ताली करन । देव दुंदभि बजै वीन
 बंसी सजै, एकसी परत आनंद घनकी भरन ॥
 आज० ॥ ३ ॥ इन्द्र हर्षित हिये नेत्र अंजुल
 किये, तृपति होत न पिये रूपअमृतझरन । दास
 भूधर भनैं सुदिन देखें बनें, कहि थकैं लोक
 लख जीभ न सकैं वरन ॥ आज० ॥ ४ ॥

३२

ऐसी समझके सिर धूल ॥ ऐसी० ॥ टेक ॥
 धरम उपजन हेत हिंसा, आचरैं अघमूल ॥
 ऐसी० ॥ १ ॥ छुके मत-मद-पान पीके, रहे
 मनमें फूल । आम चाखन चहै भोंदू, बोय पेड़
 बँबूल ॥ ऐसी० ॥ २ ॥ देव रागी लालची गुरु,
 सेय सुखहित भूल । धर्म नगकी परख नाहीं,
 भ्रम हिंडोले झूल ॥ ऐसी० ॥ ३ ॥ लाभकारन

१ घड़े-कलश । २ रत्नकी ।

रतन विणजै, परखको नहिं मूल । करत इहि
विधि वणिज भूधर, विनस जै है मूल ॥
ऐसी० ॥ ४ ॥

३३

अब पूरीकर नींदड़ी, सुन जीया रे ! चिर-
काल तू सोया ॥ सुन० ॥ टेक ॥ माया मैली
रातमें, केता काल विगोया ॥ अब० ॥ १॥ धर्म
न भूल अयान रे ! विषयोंवश बाला । सार
सुधारस छोड़के, पीवै जहर पियाला ॥ अब०
॥ २॥ मानुष भवकी पैठमें, जग विणजी आया ।
चतुर कमाई कर चले, मूढ़ों मूल गुमाया ॥
अब० ॥ ३ ॥ तिसना तज तप जिन किया,
तिन बहु हित जोया । भोगमगन शठ जे रहे,
तिन सरवस खोया ॥ अब० ॥ ४॥ काम विथा-
पीड़ित जिया, भोगहि भले जानै । खाज खुजा-
वत अंगमें, रोगी सुख मानै ॥ अब० ॥ ५ ॥
राग उरगनी जोरतैं, जग डसिया भाई !
सब जिय गाफिल हो रहे, मोह लहर चढ़ाई ॥

१ शहूर । २ खोया । ३ सर्पनी ।

अब० ॥ ६ ॥ गुरु उपगारी गारुड़ी, दुख देख
निवारै । हित उपदेश सुमंत्रसों, पढ़ि जहर
उतारै ॥ अब० ॥ ७ ॥ गुरु माता गुरु ही
पिता, गुरु सज्जन भाई । भूधर या संसारमें,
गुरु शरनसहाई ॥ अब० ॥ ८ ॥

३४. राग बंगाला ।

जगमें श्रद्धानी जीव जीवनमुक्त होंगे ॥
टेक ॥ देव गुरु सांचे मानैं, सांचो धर्म हिये
आनैं, ग्रंथ ते ही सांचे जानैं, जे जिनउक्त
होंगे ॥ जगमें० ॥ १ ॥ जीवनकी दया पालैं,
झूठ तजि चोरी टालैं, परनारी भालैं नैन जिनके
लुंक्त होंगे ॥ जगमें० ॥ २ ॥ जीयमें सन्तोष
धारैं हियैं समता विचारैं, आगैं को न बंध पारैं,
पाछैंसों चुक्त होंगे ॥ जगमें० ॥ ३ ॥ बाहिज
क्रिया अराधैं, अन्तर सरूप साधैं, भूधर ते मुक्त
लाधैं, कहूं न रुक्त होंगे ॥ जगमें० ॥ ४ ॥

१ जहर उतारनेवाले । २ इस पदकी चारों टेकें निकाल डालनेसे
एक घनाक्षरी (३२ वर्ण) कवित्त बन जाता है । ३ उक्त, प्रणीत,
कहे हुए । ४ देखनेमें । ५ छिपते हैं, लज्जित होते हैं ।

३५. राग बंगाला ।

आया रे बुढापा मानी सुधि बुधि विसरानी
 ॥ टेक ॥ श्रवनकी शक्ति घटी, चाल चालै अट-
 पटी, देह लंटी भूख घटी, लोचन झरत पानी ॥
 आया रे० ॥ १ ॥ दाँतनकी पंक्ति टूटी, हाड़नकी
 संधि छूटी, कायाकी जगरि लूटी, जात नहिं
 पहिचानी ॥ आया रे० ॥ २ ॥ बालोंने वरन
 फेरा, रोगने शरीर घेरा, पुत्रहू न आवै नेरा,
 औरोंकी कहा कहानी ॥ आया रे० ॥ २ ॥ भूधर
 समुझि अब, स्वहित करैगो कब, यह गति है है
 जब, तब पिछतैहै प्रानी ॥ आया रे० ॥ ४ ॥

३६. राग सोरठ ।

अन्तर उज्जल करना रे भाई ! ॥ टेक ॥ कपट
 कृपान तजै नहिं तबलों, करनी काज न सरना
 रे ॥ अन्तर० ॥ १ ॥ जप तप तीरथ जज्ञ
 व्रतादिक, आगमअर्थउचरना रे । विषय कषाय
 कीच नहिं धोयो, यों ही पचि पचि मरना रे ॥

१ इसकी भी टेकें निकाल देनेसे घनाक्षरी बन जाता है ।
 २ कमजोर हुई । ३ रंग । ४ निकट ।

अन्तर० ॥ २ ॥ बाहिर भेष किया उर शुचिसों
कीयें पार उतरना रे । नाहीं है सब लोक रं-
जना, ऐसे वेदन वरना रे ॥ अन्तर० ॥ ३ ॥
कामादिक मनसों मन मैला, भजन किये क्या
तिरना रे । भूधर नीलवसनपर कैसें, केसररंग
उछरना रे ॥ अन्तर० ॥ ४ ॥

३७. राग सौरठ ।

वीरा ! थारी वान बुरी परी रे, वरज्यो मा-
नत नाहिं ॥ टेक ॥ विषय विनोद महा बुरे रे,
दुख दाता सरवंग । तू हटसों ऐसें रमै रे, दीवे
पड़त पतंग ॥ वीरा० ॥ १ ॥ ये सुख हैं दिन
दोयके रे, फिर दुखकी सन्तान । कैरै कुहाड़ी
लेइकै रे, मति मारै पंग जानि ॥ वीरा० ॥ २ ॥
तनक न संकट सहि सकै रे ! छिनमें होय अ-
धीर । नरक विपति बहु दोहली रे, कैसे भरि
है वीर ॥ वीरा० ॥ ३ ॥ भव सुपना हो जायगा
रे, करनी रहेगी निदान । भूधर फिर पछता-
यगा रे, अब ही समुझि अजान ॥ वीरा० ॥ ४ ॥

१ काले कपड़ेपर । २ दीपकमें । ३ अपने हाथसे । ४ अपने पैरपर ।

३८. राग काफ़ी ।

मनहंस ! हमारी लै शिक्षा हितकारी ॥ टेक ॥
 श्रीभगवानचरन पिंजरे वसि, तजि विषयनिकी
 यारी ॥ मन० ॥ १ ॥ कुमति कागलीसों मति
 राचो, ना वह जात तिहारी । कीजै प्रीत सुमति
 हंसीसों, बुध हंसनकी प्यारी ॥ मन० ॥ २ ॥
 काहेको सेवत भव झीलर, दुखजलपूरित
 खारी । निज बल पंख पसारि उड़ो किन, हो
 शिव सारवरचारी ॥ मन० ॥ ३ ॥ गुरुके वचन
 विमल मोती चुन, क्यों निज वान विसारी ।
 है है सुखी सीख सुधि राखें, भूधर भूलें खारी
 ॥ मन० ॥ ४ ॥

३९. राग खयाल कान्हडी ।

एजी मोहि तारिये शान्तिजिनंद ॥ टेक ॥
 तारिये तारिये अधम उधारिये, तुम करुनाके
 कंद ॥ एजी० ॥ १ ॥ हथनापुर जनमें जग
 जानै, विश्वसेननृपनन्द ॥ एजी० ॥ २ ॥ धनि
 वह माता ऐरादेवी, जिन जाये जगचंद ॥

१ झील । २ सरोवर-तालाबका रहनेवाला ।

एजी० ॥ ३ ॥ भूधर विनवै दूर करो प्रभु, सेव-
कके भवद्वद ॥ एजी० ॥ ४ ॥

४०. राग ख्याल ।

और सब थोथी बातें, भज लै श्रीभगवान ॥
टेक ॥ प्रभु विन पालक कोई न तेरा, स्वारथ-
मीत जहान ॥ और० ॥ १ ॥ परवनिता
जननी सम गिननी, परधन जान पखान । इन
अमलों परमेशुर राजी, भाषैं वेद पुरान ॥
और० ॥ २ ॥ जिस उर अन्तर वसत निरन्तर,
नारी औगुनखान । तहां कहां साहिबका बासा,
दो खांडे इक म्यान ॥ और० ॥ ३ ॥ यह मत
सतगुरुका उर धरना, करना कहिं न गुमान ।
भूधर भजन न पलक विसरना, मरना मित्र
निदान ॥ और० ॥ ४ ॥

४१. राग प्रभाती ।

अंजित जिन विनती हमारी मान जी, तुम
लागे मेरे प्रान जी ॥ टेक ॥ तुम त्रिभुवनमें
कलप तरोवर, आस भरो भगवान जी ॥

१ दो तलवार ।

अजित० ॥ १ ॥ वादि अनादि गयो भव भ्रमतै,
 भयो बहुत कुलकान जी । भाग सँजोग मिले
 अब दीजे, मनवांछित वरदान जी ॥ अजित०
 ॥ २ ॥ ना हम मांगैं हाथी घोड़ा, ना कछु
 संपति आन जी । भूधरके उर बसो जगतगुरु,
 जबलौं पद निरवानजी ॥ अजित० ॥ ३ ॥

४२. राग धनासरी ।

सो मत सांचो है मन मेरे ॥ टेक ॥ जो
 अनादि सर्वज्ञप्ररूपित, रागादिक विन जे रे ॥
 सो मत० ॥ १ ॥ पुरुष प्रमान प्रमान वचन तिस,
 कल्पित जान अने रे । राग-दोष-दूषित तिन
 वायक, सांचे हैं हित तेरे ॥ सो मत० ॥ २ ॥
 देव अदोष धर्म हिंसा विन, लोभ विना गुरु वे
 रे । आदि अन्त अविरोधी आगम, चार रतन
 जहँ ये रे ॥ सो मत० ॥ ३ ॥ जगत भख्यो
 पाखण्ड परख विन, खाइ खता बहुते रे । भूधर
 करि निज सुबुधि कसौटी, धर्म कनक कसि ले
 रे ॥ सो मत० ॥ ४ ॥

१ वृथा । २ अन्यमत । ३ वचन ।

४३

मेरे चारों शरन सहाई ॥ टेक ॥ जैसे जलधि
 परत वायसकों वोहिथ एक उपाई ॥ मेरे० ॥ १ ॥
 प्रथम शरन अरहन्त चरनकी, सुरनर पूजत
 पाई । दुतिय शरन श्रीसिद्धनकेरी, लोक-ति-
 लक-पुर-राई ॥ मेरे० ॥ २ ॥ तीजै सरन सर्व
 साधुनिकी, नगन दिगम्बर-कोई । चौथै धर्म
 अहिंसारूपी, सुरगमुकतिसुखदाई ॥ मेरे० ॥ ३ ॥
 दुरगति परत सुजन परिजनपै, जीव न राख्यो
 जाई । भूधर सत्य भरोसो इनको, ये ही लेहिं
 चचाई ॥ मेरे० ॥ ४ ॥

४४. राग सारंग ।

जपि माला जिनवर नामकी ॥ टेक ॥ भजन
 सुधारससों नहिं धोई, सो रसना किस कामकी ॥
 जपि० ॥ १ ॥ सुमरन सार और मिथ्या, पट-
 तर धूँवा नामकी । विषम कमान समान विषय
 सुख, काय कोथली चामकी ॥ जपि० ॥ २ ॥
 जैसे चित्रनागके मांथै, थिर मूरति चित्रामकी ।

१ कौण्डो । २ जहाज । ३ थैली ।

चित आरूढ़ करो प्रभु ऐसैं, खोय गुँड़ी परिना-
मकी ॥ जपि० ॥ ३ ॥ कर्म वैरिं अहनिशि छल
जोवैं, सुधि न परत पल जामकीं । भूधर कैसें
बनत विसारैं, रटना पूरन रामकी ॥ जपि० ॥ ४ ॥

४५. राग मलार ।

वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी ॥ टेक ॥
साधु दिगम्बर नगन निरम्बर, संवरभूषण-
धारी ॥ वे मुनि० ॥ १ ॥ कंचन काच बराबर
जिनकै, ज्यों रिपु त्यों हितकारी । महल मसान
मरन अरु जीवन, सम गैरिमा अरु गौरी ॥ वे
मुनि० ॥ २ ॥ सम्यग्ज्ञान प्रधान पवन बल, तप
पावक परजारी । शोधत जीव सुवर्ण सदा जे,
काय-कारिमा टारी ॥ वे मुनि० ॥ ३ ॥ जोरि
जुगल कर भूधर विनवै, तिन पद ठोक हमारी ।
भाग उदय दरसन जब पाऊं, ता दिनकी बलि-
हारी ॥ मुनि० ॥ ४ ॥

४६. राग धमाल सारंग ।

होरी खेलौंगी, घर आये चिदानंद कन्त ॥

१ रातदिन । २ महिमा, बड़ाई । ३ गाली । ४ जलाई ।

टेक ॥ शिशिरं मिथ्यात गयो आई अब, कालकी लब्धि वसन्त ॥ होरी० ॥ १ ॥ पिय सँग खेलनको हम सखियो ! तरसीं काल अनन्त । भाग फिरे अब फाग रचानों, आयो विरहको अन्त ॥ होरी० ॥ २ ॥ सरधा गागरमें रुचिरूपी, केसर घोरि तुरन्त । आनँद नीर उमग पिचकारी, छोड़ो नीकी भन्त ॥ होरी० ॥ ३ ॥ आज वियोग कुमति सौतनिकै, मेरे हरष महन्त । भूधर धनि यह दिन दुर्लभ अति, सुमति सखी विहसन्त ॥ होरी० ॥ ४ ॥

४७. राग भैरौ ।

*पारस-पद-नख-प्रकाश, अरुन वरन ऐसो ॥
टेक ॥ मानों तप कुंजरके, सीसको सिंदूर पूर,
राग दोष काननकों, दावानल जैसो ॥ पारस०
॥ १ ॥ बोधमई प्रातकाल, ताको रवि उदय
लाल, मोक्षवधू-कुचप्रलेप, कुंकुमाभ तैसो ॥

१ ठंडी ऋतु । * यह पद सिन्दूरप्रकरण के पहले श्लोक (सिन्दूरप्रकरणस्तपःकरिशिरः क्रोडे कषायाटवी) की छाया है । २ लाल । ३ हाथीके । ४ वनको ।

३ भाग ३

पारस० ॥ २ ॥ कुशलवृक्ष दल उलास, इहि
विधि बहु गुणनिवास, भूधरकी भरहु आस,
दीन दासके सो ॥ पारस० ॥ ३ ॥

४८. राग धनासरी ।

शेष सुरेश नरेश रटैं तोहि, पार न कोई पावै
जू ॥ टेक ॥ काँपै नपत व्योम विलसतसौं, को
तारे गिन लावै जू ॥ शेष० ॥ १ ॥ कौन सु-
जान मेघ बूंदनकी, संख्या समुझि सुनावै जू ॥
शेष० ॥ २ ॥ भूधर सुजस गीत संपूरन, गन-
पति भी नहिं गावै जू ॥ शेष० ॥ ३ ॥

४९. राग रामकली ।

आदि पुरुष मेरी आस भरो जी । औगुन
मेरे माफ करो जी ॥ टेक ॥ दीनदयाल विरद
विसरो जी, कै विनती मोरी श्रवण धरो जी ॥१॥
काल अनादि वस्यो जगमाहीं, तुमसे जगपति
जानैं नाहीं । पाँय न पूजे अन्तरजामी, यह
अपराध क्षमा कर स्वामी ॥ आदि० ॥ २ ॥
भक्ति प्रसाद परम पद है है, बंधी बंध दशा

१ किससे । २ आकाश । ३ विलस्तसे । ४ गणधर ।

मिट जै है । तब न करौं तेरी फिर पूजा, यह
अपराध खमों प्रभु दूजा ॥ आदि० ॥ ३ ॥
भूधर दोष किया वकसावै, अरु आगेकौ लारे
लावै । देखो सेवककी ठिठवाई, गरुवे साहिबसों
बनियौई ॥ आदि० ॥ ४ ॥

५०. राग ख्याल काफी कानडी ।

तुम सुनियो साधो!, मनुवा मेरा ज्ञानी ।
सत गुरु भैंटा संसा मैटा, यह नीकै करि जानी ॥
टेक ॥ चेतनरूप अनूप हमारा, और उपाधि
विरानी ॥ तुम सुनियो० ॥ १ ॥ पुदगल भांडा
आतम खांडा, यह हिरदै ठहरानी । छीजौ भीजौ
कृत्रिम काया, मैं निरभय निरवानी ॥ तुम
सुनियो० ॥ २ ॥ मैं ही देखौं मैं ही जानौं, मेरी
होय निशानी । शबद फरस रस गंध न धारौं,
ये बातें विज्ञानी ॥ तुम सुनियो० ॥ ३ ॥ जो
हम चीन्हां सो थिर कीन्हां, हुए सुदृढ़ सर-
धानी । भूधर अब कैसें उतरैगा, खड़ग चढ़ा
जो पानी ॥ तुम सुनियो० ॥ ४ ॥

१ माफ कराता है । २ ढीठता । ३ बनियांपन । ४ संदेह ।

५१. राग काफी ।

प्रभु गुन गाय रे, यह औसर फेर न पाय रे ॥
 टेक ॥ मानुष भव जोग दुहेला, दुर्लभ सतसंगति
 मेला । सब बात भली बन आई, अरहन्त भजौ
 रे भाई ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ पहलैं चित-चीरँ सँभारो,
 कामादिक मैल उतारो । फिर प्रीति फिटकरी
 दीजे, तब सुमरन रंग रँगीजे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
 धन जोर भरा जो कूवा, परवार बढ़ैं क्या हूवा ।
 हाथी चढ़ि क्या कर लीया, प्रभु नाम विना धिक
 जीया ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ यह शिक्षा है व्यवहारी,
 निहचैकी साधनहारी । भूधर पैड़ी पग धरिये,
 तब चढ़नेको चित करिये ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥

५२. राग हागीर कल्याण ।

सुनि सुजान ! पाँचों रिपु वश करि, सुहित
 करन असमर्थ अवश करि ॥ टेक ॥ जैसेँ जड़
 खखारको कीड़ा, सुहित सम्हाल सकैं नहिँ फँस
 करि ॥ सुनि० ॥ १ ॥ पांचनको मुखिया मन
 चंचल, पहले ताहि पकर रस (?) कस करि । समझ

१ वस्त्र । २ पाँचों इन्द्रि । ३ कफ ।

देखि नायकके जीतैं, जै है भाजि सहज सब
लसकरि ॥ सुनि० ॥ २ ॥ इंद्रियलीन जनम
सब खोयो, बाकी चलो जात है खस करि ।
भूधर सीख मान सतगुरुकी, इनसों प्रीति तोरि
अब वश करि ॥ सुनि० ॥ ३ ॥

५३. राग गौरी ।

देखो भाई ! आत्मदेव विराजै ॥ टेक ॥
इसही हूँ हाथ देवलमें, केवलरूपी राजै ॥
देखो० ॥ १ ॥ अमल उजास जोतिमय जाकी,
मुद्रा मंजुल छाजै । मुनिजनपूज अचल अवि-
नाशी, गुण वरनत बुधि लाजै ॥ देखो० ॥ २ ॥
परसंजोग समल प्रतिभासत, निज गुण मूल न
त्याजै । जैसे फटिक पखान हेतसों, श्याम अरुन
दुति साजै ॥ देखो० ॥ ३ ॥ 'सोऽहं' पद सम-
तासों ध्यावत, घटहीमें प्रभु पाजै । भूधर निकट
निवास जासुको, गुरु विन भरम न भाजै ॥
देखो० ॥ ४ ॥

१ लष्कर-सेना । २ साढ़ेतीन हाथके शरीररूपी मंदिरमें ।

५४. राग ख्याल ।

अब नित नेमि नाम भजौ ॥ टेक ॥ सच्चा
 साहिब यह निज जानौ, और अदेव तजौ ॥ अब०
 ॥ १ ॥ चंचल चित्त चरन थिर राखो, विषयनतैं
 वरजौ ॥ अब० ॥ २ ॥ आननतैं गुन गाय निर-
 न्तर, पानन पांय जैजौ ॥ अब० ॥ ३ ॥ भूधर जो
 भवसागर तिरना, भक्ति जहाज सजौ ॥ अब० ॥ ४ ॥

५५. राग श्रीगौरी ।

(“ माया काली नागिनि जिन ढसिया सब संसार हो ” यह चाल ।)

काया गागरि जो जरी, तुम देखो चतुर वि-
 चार हो ॥ टेक ॥ जैसें कुलहिया कांचकी, जाके
 विनसत नाहीं बार हो ॥ काया० ॥ १ ॥ मांस-
 मयी माटी लई अरु, सानी रुधिर लगाय हो ॥
 कीन्हीं करम कुम्हारने, जासों काहूकी न वसाय
 हो ॥ काया० ॥ २ ॥ और कथा याकी सुनौं,
 यामैं अध उरध दश ठेह हो । जीव सलिल तहां
 थंभ रह्यौ भाई, अद्भुत अचरज येह हो ॥

१ मुखसे । २ हाथ जोड़कर । ३ नमन करो । ४ जरजरित, दूटी
 फूटी ।

काया० ॥ ३ ॥ यासौं ममत निवारकैं, नित
रहिये प्रभु अनुकूल हो । भूधर ऐसे ख्यालका
भाई, पलक भरोसा भूल हो ॥ काया० ॥ ४ ॥

५६. राग ख्याल बरवा ।

(“ देखनेको आई लाल मैं तो तेरे देखनेको आई ” यह चाल ।)

मैं तो थाकी आज महिमा जानी ॥ टेक ॥
अब लों नहिं उर आनी ॥ मैं तो० ॥ १ ॥
काहेको भव वनमें भ्रमते, क्यों होते दुखदानी ॥
मैं तो० ॥ २ ॥ नामप्रताप तिरे अंजनसे,
कीचकसे अभिमानी ॥ मैं तो० ॥ ३ ॥ ऐसी
साख बहुत सुनियत है, जैनपुराण बखानी ॥
मैं तो० ॥ ४ ॥ भूधरको सेवा वर दीजे, मैं
जांचक तुम दानी ॥ मैं तो० ॥ ५ ॥

५७. राग विहाग ।

अरे मन चल रे, श्रीहथनापुरकी जात ॥
टेक ॥ रामा रामा धन धन करते, जावै जनम
विफल रे ॥ अरे० ॥ १ ॥ करि तीरथ जप तप
जिनपूजा, लालच वैरी दल रे ॥ अरे० ॥ २ ॥

१ यात्राको । २ स्त्री ।

शांति कुंथु अर तीनों जिनकां, चारु कल्याण-
 कथल रे ॥ अरे० ॥ ३ ॥ जा दरसत परसत
 सुख उपजत, जाहिं सकल अघ गल रे ॥ अरे०
 ॥४॥ देश दिशन्तरके जन आवैं, गावैं जिन गुन
 रल रे ॥ अरे० ॥ ५ ॥ तीरथ गमन सहामी
 मेला, एक पंथ द्वै फल रे ॥ अरे० ॥ ६ ॥
 कायाके संग काल फिरै है, तन छायाके छल
 रे ॥ अरे० ॥ ७ ॥ माया मोह जाल बंधनसौं,
 भूधर वेगि निकल रे ॥ अरे० ॥ ८ ॥

५८. राग-विहाग ।

जगत जन जूवा हारि चले ॥ टेक ॥ काम
 कुटिल सँग बाजी माँड़ी, उन करि कपट छले ॥
 जगत० ॥ १ ॥ चार कषायमयी जहँ चौपरि,
 पांसे जोग रले । इत सरवस उत कामिनी
 कौड़ी, इह विधि झटक चले । जगत० ॥ २ ॥
 क्रूर खिलार विचार न कीन्हों, द्वै हैं ख्वार
 भले । विना विवेक मनोरथ काके, भूधर सफल
 फले । जगत० ॥ ३ ॥

५९. राग बिहाग ।

तहां लै चल री ! जहां जादौपति प्यारो ॥
 टेक ॥ नेमि निशाकर विन यह चन्दा, तन मन
 दहत सकल री । तहां० ॥ १ ॥ किरन किधौं
 नाविक-शर-तति कै, ज्यों पावककी झल री ।
 तारे हैं कि अँगारे सजनी, रजनी राँकसदल
 री । तहां० ॥ २ ॥ इह विधि राजुल राजकुमारी,
 विरह तपी बेकल री । भूधर धन्न शिवाँसुत
 चाँदर, वरसायो सँमजल री । तहां० ॥ ३ ॥

६०. राग ख्याल ।

अरे ! हां चेतो रे भाई ॥ टेक ॥ मानुष देह
 लही दुलही, सुघरी उघरी सतसंगति पाई ।
 अरे हां० ॥ १ ॥ जे करनी बरनी करनी नहिं,
 ते समझी करनी समझाई । अरे हां० ॥ २ ॥ यों
 शुभ थान जग्यो उर ज्ञान, विषैविषपान तृषा
 न बुझाई । अरे हां० ॥ ३ ॥ पारस पाय सुधा-

१ राक्षस । २ शिवादेवीके पुत्र नेमि । ३ बादल-मेघ । ४ शम-
 समतारूपी जल । ५ टेक छोड़कर पढ़नेसे इस पदका एक मत्तगयन्द
 (तेईसा) सवैया बन जाता है ।

रस भूधर, भीखकेमाहिं सुलाज न आई ॥
अरे हां० ॥ ४ ॥

६१. राग सोरठ ।

सो गुरुदेव हमारा है साधो ॥ टेक ॥ जोग
अगनिमें जो थिर राखै, यह चित चंचल पारा
है ॥ सो गुरु० ॥ १ ॥ करेंन कुरंग खरे मद-
माते, जप तप खेत उजारा है । संजम डोर
जोर वश कीने, ऐसा ज्ञान विचारा है ॥ सो
गुरु० ॥ २ ॥ जा लक्ष्मीको सब जग चाहै,
दास हुआ जग सारा है । सो प्रभुके चरननकी
चेरी, देखो अचरज भारा है ॥ सो गुरु० ॥ ३ ॥
लोभ सरपके कहर जहरकी, लहर गई दुख
टारा है । भूधर ता रिखका शिख हूजे, तब
कछु होय सुधारा है ॥ सो गुरु० ॥ ४ ॥

६२. राग सोरठ ।

स्वामीजी सांची सरन तुम्हारी ॥ टेक ॥
समरथ शांत सकल गुनपूरे, भयो भरोसो
भारी ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ जनम जरा जग बैरी

१ इन्द्रिय । २. उजाड़ा, नष्ट किया । ३ ऋषि-मुनिका । ४ शिष्य ।

जीते, टेव मरनकी टारी । हमहूको अजरामर
करियो, भरियो आस हमारी ॥ स्वामी० ॥ २ ॥
जनमें मरैं धरैं तन फिरि फिरि, सो साहिब
संसारी । भूधर परदालिद क्यों दलि है, जो है
आप भिखारी ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥

६३.

जीवदया व्रत तरु बड़ो, पालो पालो बड़-
भाग ॥ टेक ॥ कीड़ी कुंजर कुंथुवा, जेते जग-
जन्त । आप सरीखे देखिये, करिये नहिं भन्त ॥
जीवदया० ॥ १ ॥ जैसे अपने हीयंड़े, प्यारे
निज प्रान । त्यों सबहीकों लाड़िये, निहचै यह
जान ॥ जीवदया० ॥ २ ॥ फांस चुमै टुक
देहमें, कछु नाहिं सुहाय । त्यों परदुखकी वे-
दना, समझो मन लाय ॥ जीवदया० ॥ ३ ॥
मन वचसौं अर कायसौं, करिये परकाज ।
किसहीकों न सताइये, सिखवैं रिखिराज ॥ जीव-
दया० ॥ ४ ॥ करुना जगकी मायंडी, धीजै
सब कोय । धिग ! धिग ! निरदय भावना, कंपै

१ भेद । २ दिलमें । ३ माता । ४ प्रतीति करें ।

जिय जोय ॥ जीवदया० ॥ ५ ॥ सब दंसण
 सब लोयमें, सब कालमँझार । यह करनी बहु
 शंसिये, ऐसो गुणसार ॥ जीवदया० ॥ ६ ॥
 निरदै नर भी संस्तुवै, निदै कोइ नाहिं । पालें
 विरले साहसी, धनि वे जगमाहिं ॥ जीवदया०
 ॥ ७ ॥ पर सुखसौं सुख होय, पर-पीड़ासौं पीर ।
 भूधर जो चित चाहिये, सोई कर बीर ! ॥
 जीवदया० ॥ ८ ॥

६४.

ऐसो श्रावक कुल तुम पाय, वृथा क्यों
 खोवत हो ॥ टेक ॥ कठिन कठिनकर नरभव
 पाई, तुम लेखी आसान । धर्म विसारि विषयमें
 राचौ, मानी न गुरुकी आन ॥ वृथा० ॥ १ ॥
 चक्री एक मतंगज पायो; तापर ईधन ढोयो ।
 विना विवेक विना मतिहीको, पाय सुधा पग
 धोयो ॥ वृथा० ॥ २ ॥ काहू शठ चिन्तामणि
 पायो, मरम न जानो ताय । वायस देखि उद-
 धिमें फैक्यो, फिर पीछे पछताय ॥ वृथा० ॥ ३ ॥

१ दर्शनमें-धर्ममें । २ लोकमें । ३ सराहिए । ४ स्तुति करे ।

सात विसन आठों मद त्यागो, करुना चित्त
विचारो । तीन रतन हिरदैमें धारो, आवागमन
निवारो ॥ वृथा० ॥ ४ ॥ भूधरदास कहत
भविजनसों, चेतन अब तो सम्हारो । प्रभुको
नाम तरन तारन जपि, कर्मफन्द निरवारो ॥
वृथा० ॥ ५ ॥

६५. राग ख्याल । ✓

नैननिको वान परी, दरसनकी ॥ टेक ॥
जिनमुखचन्द चकोर चित्त मुझ, ऐसी प्रीति
करी ॥ नैन० ॥ १ ॥ और अदेवनके चितवनको
अब चित चाह टरी । ज्यों सब धूलि दबै
दिशि दिशिकी, लागत मेघझरी ॥ नैन० ॥ २ ॥
छबी समाय रही लोचनमें, विसरत नाहिं
घरी । भूधर कह यह टेव रहो थिर, जनम
जनम हमरी ॥ नैन० ॥ ३ ॥

६६. चाल गोपीचन्दकी ।

यह तन जंगम रूखड़ा, सुनियो भवि प्रानी ॥
एक बूंद इस बीच है, कछु बात न छाँनी ॥ टेक ॥

१ वृक्ष । २ छुपी ।

गरभ खेतमें मास नौ, निजरूप दुराया । बाल
 अंकुरा बढ़ गया, तब नजरोँ आया ॥ १ ॥
 अस्थिरसा भीतर भया, जानै सब कोई । चाम
 त्वचा ऊपर चढ़ी, देखो सब लोई ॥ २ ॥ अधो
 अंग जिस पेड़ है, लख लेहु सयाना । भुज शाखा
 दल आँगुरी, दृग फूल रँवाँना ॥ ३ ॥ वनिता
 बेलि सुहावनी, आलिंगन कीया । पुत्रादिक पंछी
 तहां, उड़ि बासा लिया ॥ ४ ॥ निरख विरंख बहु
 सोहना, सबके मनमाना । स्वजन लोग छाया
 तकी, निज स्वारथ जाना ॥ ५ ॥ काम भोग
 फलसों फला, मन देखिं लुभाया । चाखतके
 मीठे लगे, पीछैं पछताया ॥ ६ ॥ जरादि बलसों
 छवि घटी, किसही न सुहाया । काल अगनि
 जब लहलही, तब खोज न पाया ॥ ७ ॥ यह
 मानुष दुमकी दशा, हिरदै धरि लीजे । ज्यों
 हूवा, त्यों जाय है, कछु जतन करीजे ॥ ८ ॥ धर्म
 सलिलसों सींचिकै, तप धूप दिखइये । सुरग
 मोक्ष फल तब लगै, भूधर सुख पइये ॥ ९ ॥

१ रमणीय । २ वृक्ष । ३ पता ।

६७. कालिंगडा ।

(“ गरीब जुलाहा ताना कौन बुनैगा ” इस चालमें ।)

चरखा चलता नहीं, चरखा हुआ पुराना ॥
 टेक ॥ पग खूटे दो हालन लागे, उर मदरा
 खखराना । छीदी हुई पांखड़ी पांसू, फिर नहीं
 मनमाना ॥ चरखा० ॥ १ ॥ रसना तकलीने
 चल खाया, सो अब कैसे खूटे ॥ शबद सूत सूधा
 नहीं निकसै, घड़ी घड़ी पल टूटै ॥ चरखा०
 ॥ २ ॥ आयु मालका नहीं भरोसा, अंग चला-
 चल सारे । रोज इलाज मरम्मत चाहै, बैद
 बाढ़ही हारे ॥ चरखा० ॥ ३ ॥ नया चरखला
 रंगा चंगा, सबका चिन्त चुरावै । पलटा वरन
 गये गुन अगले, अब देखें नहीं भावै ॥ चरखा०
 ॥ ४ ॥ मौटा महीं कातकर भाई !, कर अपना
 सुरक्षेरा ॥ अंत आगमें ईधन होगा, भूधर
 समझ सवेरा ॥ चरखा० ॥ ५ ॥

६८. आरती ।

आरती आदि जिनिंद तुम्हारी, नाभिकुमार
 कनकछविधारी ॥ आरती० ॥ टेक ॥ जुगकी

आदि प्रजा प्रतिपाली, सकल जननकी आरति
 टाली ॥ आरती० ॥ १ ॥ वांछापूरन सबके
 स्वामी, प्रगट भये प्रभु अंतरजामी ॥ आरती०
 ॥ २ ॥ कोटभानुजुत आभा तनकी, चाहत
 चाह मिटै नहिं तनकी ॥ आरती० ॥ ३ ॥
 नाटक निरखि परम पद ध्यायो, राग थान
 वैराग उपायो ॥ आरती० ॥ ४ ॥ आदि जग-
 तगुरु आदि विधाता, सुरग मुक्ति मार-
 गके दाता ॥ आरती० ॥ ५ ॥ दीनदयाल
 दया अब कीजे, भूधर सेवकको ढिग लीजे ॥
 आरती० ॥ ६ ॥

६९. राग सलहामारू ।

सुनि सुनि हे साथनि ! म्हारे मनकी बात ।
 सुरति सखीसों सुमति राणी यों कहै जी ।
 बीत्यो है साथनि म्हारी ! दीरघकाल, म्हारे
 सनेही म्हारे घर ना रहै जी ॥ १ ॥ ना वरज्यो
 रहै साथनि म्हारी चेतनराव, कारज अधम
 अचेतनके करै जी । दुरमति है साथनि
 म्हारी जात कुजात, सोई चिदातम पियको

चित्त हरै जी ॥ २ ॥ सिखयौ है साथनि म्हारी
 केती बार,, क्यों ही कियो हठी हठ एरी हरै
 जी । कीजे हो साथनि म्हारी कौन उपाय,
 अब यह विरह विथा नहिं सही परै जी ॥ ३ ॥
 चलि चलि री साथनि म्हारी, जिनजीके पास,
 वे उपगारी इसैं समझावसी जी । जगसी हे
 सखी म्हारे मस्तक भाग, जो म्हारौ कंथ
 समझि घर आवसी जी ॥ ४ ॥ कारज हे सखी
 म्हारी ! सिद्ध न होय, जब लग काललबधि-
 बल नहिं भलो जी । तो पण हे सखी म्हारी
 उद्यम जोग, सीख सयानी भूधर मन
 सांभलो जी ॥ ५ ॥

७०. जकड़ी ।

अब मन मेरे वे !, सुनि सुनि सीख सयानी ।
 जिनवर चरना वे !, करि करि प्रीति सुज्ञानी ॥
 करि प्रीति सुज्ञानी ! शिवसुखदानी, धन जीतब
 है पंचदिना । कोटि वरष जीवौ किस लेखे, जिन
 चरणांबुजभक्ति विना ॥ नर परजाय पाय अति
 उत्तम, गृह वसि यह लाहा ले रे ! । समझ समझ

बोलैं गुरुज्ञानी, सीख सयानी मन मेरे ॥ १ ॥
 तू मति तरसै वे !, सम्पति देखि पराई । बोये
 लुनि ले वे !, जो निज पूर्व कमाई ॥ पूर्व कमाई
 सम्पति पाई, देखि देखि मति झूर मरै । बोय
 बँबूल शूल-तरु भोंदू !, आमनकी क्या आस
 करै ॥ अब कछु समझ बूझ नर तासों, ज्यों
 फिर परभव सुख दरसै । करि निजध्यान दान
 तप संजम, देखि विभव पर मत तरसै ॥ २ ॥
 जो जग दीसै वे !, सुंदर अरु सुखदाई । सो सब
 फलिया वे !, धरमकल्पद्रुम भाई ! ॥ सो सब धर्म
 कल्पद्रुमके फल, रथ पायक बहु ऋद्धि सही ।
 तेज तुरंग तुंग गज नौ निधि, चौदह रतन
 छखण्ड मही ॥ रति उनहार रूपकी सीमा, सहस
 छ्यानवै नारि वरै । सो सब जानि धर्मफल भाई !
 जो जग सुंदर दृष्टि परै ॥ ३ ॥ लगैं असुंदर वे !,
 कंटक वान घनेरे । ते रस फलिया वे !, पाप
 कनक-तरु केरे ॥ ते सब पाप कनकतरुके फल,
 रोग सोग दुख नित्य नये । कुथित शरीर
 चीर नहिं तापर, घर घर फिरत फकीर भये ॥

भूख प्यास पीड़ें कन मांगैं, होत अनादर पग
 पगमें । ये परतच्छ पाप संचित फल, लगैं
 असुंदर जे जगमें ॥ ४ ॥ इस भव वनमें वे !,
 ये दोऊ तरु जाने । जो मन माने वे !, सोई
 सींचि सयाने ॥ सींचि सयाने ! जो मन माने,
 वेर वेर अब कौन कहै । तू करतार तुही फल-
 भोगी, अपने सुख दुख आप लहै ॥ धन्य !
 धन्य ! जिन मारग सुंदर, सेवन जोग तिहूँ
 पनमें । जासों समुझि परै सब भूधर, सदा
 शरण इस भववनमें ॥ ५ ॥

७१. विनती ।

हरिगीतिका ।

5267

पुलकन्त नयन चकोर पक्षी, हँसत उर इन्दी-
 वरो । दुर्बुद्धि चकवी विलख विछुरी, निबिड़
 मिथ्यातम हरो ॥ आनन्द अम्बुज उमग उछ-
 ख्यो, अखिल आतम निरदले । जिनवदन पूर-
 नचन्द्र निरखत, सकल मनवांछित फले ॥ १ ॥
 मुझ आज आतम भयो पावन, आज विघ्न
 विनाशियो । संसारसागर नीर निवड्यो, अखिल

तत्त्व प्रकाशियो ॥ अब भई कमला किंकरी
 मुझ, उभय भव निर्मल ठये । दुख जरो दुर्गति-
 वासं निवरो, आज नव मंगल भये ॥ २ ॥
 मनहरन मूरति हेरि प्रभुकी, कौन उपमा लाइये ।
 मम सकल तनके रोम हुलसे, हर्ष ओर न पा-
 इये ॥ कल्याणकाल प्रतच्छ प्रभुको, लखें जो
 सुर नर घने । तिस समयकी आनन्दमहिमा,
 कहत क्यों मुखसों बने ॥ ३ ॥ भर नयन निरखे
 नाथ तुमको, और वांछा ना रही । मन ठठ
 मनोरथ भये पूरन, रंक मानो निधि लही ॥
 अब होय भव भव भक्ति तुम्हरी, कृपा ऐसी
 कीजिये । कर जोर 'भूधरदास' विनवै, यही
 वर मोहि दीजिये ॥ ४ ॥

७२. विनती ।

तुम तरनतारन भवनिवारन, भविक-मनआ-
 नन्दनो । श्रीनाभिनन्दन जगतवन्दन, आदि-
 नाथ जिनिन्दनो ॥ तुम आदिनाथ अनादि
 सेऊं, सेय पद पूजा करों । कैलाशगिरिपर
 ऋषभ जिनवर, चरणकमल हृदय धरों ॥ १ ॥

तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महा-
 बली । यह जानकर तुम शरण आयो, कृपा
 कीजे नाथ जी ॥ तुम चन्द्रवदन सुचन्द्रलक्षण,
 चन्द्रपुरिपरमेशजू । मंहासेननन्दन जगतवन्दन,
 चन्द्रनाथ जिनेशजू ॥ २ ॥ तुम बालबोध-
 विवेकसागर, भव्यकमलप्रकाशनो । श्रीनेमि-
 नाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो ॥
 तुम तजी राजुल राजकन्या, कामसेन्या वश
 करी । चारित्ररथ चढ़ि भये दूलह, जाय शिव-
 सुन्दरि वरी ॥ ३ ॥ इन्द्रादि जन्मस्थान जि-
 नके, करन कनकाचल चढ़े । गंधर्व देवन सु-
 यश गाये, अपसरा मंगल पढ़े ॥ इहि विधि
 सुरासुर निज नियोगी, सकल सेवाविधि ठही ।
 ते पार्श्व प्रभु मो आस पूरो, चरनसेवक हों सही
 ॥ ४ ॥ तुम ज्ञान रवि अज्ञानतमहर, सेवकन
 सुख देत हो । मम कुमतिहारन सुमतिकारन,
 दुरित सब हर लेत हो ॥ तुम मोक्षदाता
 कर्मघाता, दीन जानि दया करो । सिद्धार्थ-
 नन्दन जगतवन्दन, महावीर जिनेश्वरो ॥ ५ ॥

चौवीस तीर्थकर सुजिनको, नमत सुरनर आ-
 यके । मैं शरण आयो हर्ष पायो, जोर कर सिर
 नायके ॥ तुम तरनतारन हो प्रभूजी, मोहि
 पार उतारियो । मैं हीन दीन दयालु प्रभुजी,
 काज मेरो सारियो ॥ ६ ॥ यह अतुलमहिमा-
 सिन्धु साहब, शक्र पार न पावही । तजि हासभय
 तुम दास भूधर, भक्तिवश यश गावही ॥ ७ ॥

७३. गुरुविनती ।

बन्दौं दिगम्बरगुरुचरन, जग तरन तारन
 जान । जे भरम भारी रोगको, हैं राजवैद्य
 महान ॥ जिनके अनुग्रह विन कभी, नहिं कटें
 कर्म जँजीर । ते साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो
 पातक पीर ॥ १ ॥ यह तन अपावन अशुचि
 है, संसार सकल असार । ये भोग विष पकवा-
 नसे, इस भाँति सोच विचार ॥ तप विरचि श्री-
 मुनि वन वसे, सब त्यागि परिग्रह भीर । ते साधु
 मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक पीर ॥ २ ॥ जे
 काच कंचन सम गिनैं, अरि मित्र एक सरूप ॥

निंदा बड़ाई सारिखी, वनखण्ड शहर अनूप ॥
 सुख दुःख जीवन मरनमें, नहिं खुशी नहिं दि-
 लगीर । ते साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक
 पीर ॥ ३ ॥ जे बाह्य परवत वन वसैं, गिरि गुहा
 महल मनोग । सिल सेज समता सहचरी, शशि-
 किरण दीपक जोग ॥ मृग मित्र भोजन तपमई,
 विज्ञान निरमल नीर । ते साधु मेरे मन वसो,
 मेरी हरो पातक पीर ॥ ४ ॥ सुखैं सरोवर जल
 भरे, सूखैं तरंगनितोय । वाटैं वटोही ना चलैं,
 जहां घाम गरमी होय ॥ तिस काल मुनिवर तप
 तपैं, गिरिशिखर ठाड़े धीर । ते साधु मेरे मन
 वसो, मेरी हरो पातक पीर ॥ ५ ॥ घन घोर गरजैं
 घनघटा, जल पुरै पावैसकाल । चहुँ ओर चमकै
 बीजुरी, अति चलै शीतल व्याँल ॥ तरुहेट तिष्ठैं
 तब जती, एकान्त अचल शरीर । ते साधु मेरे
 मन वसो, मेरी हरो पातक पीर ॥ ६ ॥ जब-
 शीत मास तुषारसों, दाँहै सकल वनराय । जब

१ समान, बराबर । २ नदीका जल । ३ रास्तेसे । ४ मुसाफिर ।
 ५ बरसातमें । ६ पवन । ७ वृक्षके नीचे ।

जमै पानी पोखरां, थरहरै सबकी काय ॥ तब
 नगन निवसैं चौहटैं, अथवा नदकिं तीर । ते
 साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक पीर ॥ ७ ॥
 कर जोर भूधर बीनवै, कब मिलैं वह मुनिराज ।
 यह आस मनकी कब फलै, मेरे सैं सैगरे काज ॥
 संसार विषम विदेशमें, जे विना कारण वीर । ते
 साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक पीर ॥ ८ ॥

७४. विनती ।

(चौपाई १६ मात्रा ।)

जै जगपूज परमगुरु नामी, पतित उधारन
 अंतरजामी । दास दुखी तुम अति उपगारी,
 सुनिये प्रभु ! अरदास हमारी ॥ १ ॥ यह भव घोर
 समुद्र महा है, भूधर भ्रम-जल-पूर रहा है । अंतर
 दुख दुःसह बहुतेरे, ते बड़वानल साहिब मेरे
 ॥ २ ॥ जनम जरा गद मरन जहां है, ये ही प्रबल
 तरंग तहां है । आवत विपति नदीगन जामें, मोह
 महान मगर इक तामें ॥ ३ ॥ तिस मुख जीव पखो
 दुख पावै, हे जिन ! तुम विन कौन छुड़ावै ।

१ चौपटमैदान । २ सिद्ध होवें । ३ सब ।

अशरन-शरन अनुग्रह कीजे, यह दुख मेटि
 सुकति मुझ दीजे ॥ ४ ॥ दीर्घ काल गयो
 विललावैं, अब ये सूल सहे नहिं जावैं । सुनि-
 यत यों जिनशासनमाहीं, पंचम काल परमपद
 नाहीं ॥ ५ ॥ कारन पांच मिलैं जब सारे, तब
 शिव सेवक जाहिं तुम्हारे । तातैं यह विनती
 अब मेरी, स्वामी ! शरण लई हम तेरी ॥ ६ ॥
 प्रभु आगैं चितचाह प्रकासौं, भव भव श्रावक-
 कुल अभिलासौं । भव भव जिन आगम अव-
 गाहौं, भव भव भक्ति शरणकी चाहौं ॥ ७ ॥ भव
 भवमें सत संगति पाऊं, भव भव साधनके गुन
 गाऊं । परनिंदा मुख भूलि न भाखूं, मैत्रीभाव
 सबनसों राखूं ॥ ८ ॥ भव भव अनुभव आतमकेरा,
 होहु समाधिमरण नित मेरा । जबलौं जनम
 जगतमें लाधौं, काललब्धि बल लहि शिव साधौं
 ॥ ९ ॥ तबलौं ये प्रापति मुझ हूजौ, भक्ति प्रताप
 मनोरथ पूजौ । प्रभु सब समरथ हम यह लौरैं,
 अधर अरज करत कर जोरैं ॥ १० ॥

७५. नेमिनाथजीकी विनती ।

त्रिभुवनगुरु स्वामी जी, करुनानिधि नामी
 जी । सुनि अंतरजामी, मेरी वीनती जी ॥ १ ॥
 मैं दास तुम्हारा जी, दुखिया बहु भारा जी ! दुख
 मेटनहारा, तुम जादोंपती जी ॥ २ ॥ भरम्यो
 संसारा जी, चिर विपति-भँडारा जी । कहिं सार
 न सारे, चहुँगति डोलियो जी ॥ ३ ॥ दुख मेरु
 समाना जी, सुख सरसों-दाना जी । अब जान
 धरि ज्ञान, तराजू तोलिया जी ॥ ४ ॥ थावर
 तन पाया जी, त्रस नाम धराया जी । कृमि कुंथु
 कहाया, मरि भँवरा हुवा जी ॥ ५ ॥ पशुकाया
 सारी जी, नाना विधि धारी जी । जलचारी
 थलचारी, उड़न पखेरु हुवा जी ॥ ६ ॥ नरक-
 नकेमाहीं जी, दुख ओर न काहीं जी । अति
 घोर जहाँ है, सरिता खारकी जी ॥ ७ ॥ पुनि
 असुर संघारैं जी, निज वैर विचारैं जी । मिलि
 बांधैं अर मारैं, निरदय नारकी जी ॥ ८ ॥ मा-
 नुष अवतारैं जी, रह्यो गरभमँझारैं जी । रटि
 रोयो जनमत, वारैं मैं घनों जी ॥ ९ ॥ जो-

वन तन रोगी जी, कै विरहवियोगी जी । फिर
 भोगी बहुविधि, विरधपनाकी वेदना जी ॥ १० ॥
 सुरपदवी पाई जी, रंभा उर लाई जी । तहाँ
 देखि पराई, संपति झूरियो जी ॥ ११ ॥ माला
 मुरझानी जी, तब आरति ठानी जी । तिथि
 पूरन जानी, मरत विसूरियो जी ॥ १२ ॥ यों
 दुख भवकेरा जी, भुगतो बहुतेरा जी । प्रभु !
 मेरे कहतै, पार न है कहीं जी ॥ १३ ॥ मि-
 थ्यामदमाता जी, चाही नित साता जी । सुख-
 दाता जगत्राता, तुम जाने नहीं जी ॥ १४ ॥
 प्रभु भागनि पाये जी, गुन श्रवन सुहाये जी ।
 तकि आयो अब सेवककी, विपदा हरो जी
 ॥ १५ ॥ भववास बसेरा जी, फिरि होय न
 मेरा जी । सुख पावै जन तेरा, स्वामी ! सो
 करो जी ॥ १६ ॥ तुम शरनसहाई जी, तुम
 सज्जनभाई जी । तुम माई तुम्हीं बाप, दया
 मुझ लीजिये जी ॥ १७ ॥ भूधर कर जौरे जी,
 ठाड़ो प्रभु औरै जी । निजदास निहारो, निर-
 भय कीजिये जी ॥ १८ ॥

७६. विनती ।

(ढाल परमादी ।)

अहो ! जगतगुरु एक, सुनियो अरज ह-
 मारी । तुम हो दीन दयाल, मैं दुखिया संसारी
 ॥ १ ॥ इस भव वनमें वादि, काल अनादि
 गमायो । भ्रमत चहुँगतिमाहिं, सुख नहिं दुख
 बहु पायो ॥ २ ॥ कर्म महारिपु जोर, एक न
 कान करैं जी । मनमान्यां दुख देहिं, कांहुसों
 न डरैं जी ॥ ३ ॥ कबहुं इतर निगोद, कबहुं
 नर्क दिखावैं ! सुरनर पशुगतिमाहिं, बहुविधि
 नाच नचावैं ॥ ४ ॥ प्रभु ! इनके परसंग, भव
 भवमाहिं बुरे जी । जे दुख देखे देव !, तुमसों
 नाहिं दुरे जी ॥ ५ ॥ एक जन्मकी बात, कहि
 न सकों सुनि स्वामी ! । तुम अनन्त परजाय,
 जानत अंतरजामी ॥ ६ ॥ मैं तो एक अनाथ,
 ये मिलि दुष्ट घनेरे । कियो बहुत बेहाल, सुनि-
 यो साहिब मेरे ॥ ७ ॥ ज्ञान महानिधि लूटि,
 रंक निबल करि डाख्यो । इनही तुम मुझमाहिं,
 हे जिन ! अंतर पाख्यो ॥ ८ ॥ पाप पुन्यकी

दोइ, पाँयनि बेरी ड़ारी । तन काराग्रहमाहिं,
मोहि दियो दुख भारी ॥ ९ ॥ इनको नेक वि-
गार, मैं कछु नाहिं कियो जी । विनकारन जंग-
वंध !, बहुविधि वैर लियो जी ॥ १० ॥ अब
आयो तुम पास, सुनि जिन ! सुजस तिहारो ।
नीतनिपुन जगराय !, कीजे न्याव हमारो ॥ ११ ॥
दुष्टन देहु निकास, साधुनकों रखि लीजे । विनवै
भूधरदास, हे प्रभु ! ढील न कीजे ॥ १२ ॥

७७. गुरुकी विनती ।

(राग—भरतरी । दोहा ।)

ते गुरु मेरे मन वसो, जे भव जलधि
जिहाज । आप तिरैं पर तारहीं, ऐसे श्रीऋषि-
राज ॥ ते गुरु० ॥ १ ॥ मोह महारिपु जीतिकैं,
छाँड़यो सब घरवार । होय दिगम्बर वन बसे,
आतम शुद्ध विचार ॥ ते गुरु० ॥ २ ॥ रोग-
उरग-बिल वेंपु गिण्यो, भोग भुजंग समान ।
कदली तरु संसार है, त्यागो सब यह जान ॥
ते गुरु० ॥ ३ ॥ रतनत्रय निधि उर धरै, अरु

१ रोगरूपी सर्पका बिल । २ शरीर ।

निरग्रंथ त्रिकाल । मार्यो काम खवीसको,
 स्वामी परम दयाल ॥ ते गुरु० ॥ ४ ॥ पंच महा-
 व्रत आदरै, पांचों सुमति समेत । तीन गुपति
 पालैं सदा, अजर अमर पद हेत ॥ ते गुरु० ॥ ५ ॥
 धर्म धरैं दशलक्षणी, भावैं भावना सार । सहै
 परीसह बीस द्वै, चारित-तन-भँडा ॥ ते गुरु०
 ॥ ६ ॥ जेठ तपै रवि आंकरो, सूखै सरवरनार ।
 शैल-शिखर मुनि तप तपैं, द्वाँझैं नगन शरीर ॥
 ते गुरु० ॥ ७ ॥ पावस रैन डगवनी, वरसै जल-
 धर-धार । तरुतल निवसैं साहसी, वाँजै झंझा-
 वार ॥ ते गुरु० ॥ ८ ॥ शीत पड़ै कपि-मद गलै,
 दाहै सब वनराय । ताल तरंगनिके तटै, ठाढ़े
 ध्यान लगाय ॥ ते गुरु० ॥ ९ ॥ इहि विधि
 दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमँझार । लागे सहज
 सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥ ते गुरु० ॥ १० ॥
 पूरव भोग न चिंतवैं, आगम वांछा नाहिं ।
 चहुँगतिके दुखसों डरैं, सुरति लगां शिव-

१ तेजीसे । २ जलावैं । ३ चलती है । ४ बरसाती हवाको
 झंझा कहते हैं ।

माहिं ॥ ते गुरु० ॥ ११ ॥ रंगमहलमें पौढ़ते,
 कोमल सेज बिछाय । ते पच्छिमनिशि भूमिमें,
 सोवैं संवरि काय ॥ ते गुरु० ॥ १२ ॥ गज
 चढ़ि चलते गरबसों, सेना सजि चतुरंग ।
 निरखि निरखि पग वे धरैं, पालैं करुणा अंग ॥
 ते गुरु० ॥ १३ ॥ वे गुरु चरण जहां धरैं,
 जगमें तीरथ जेह । सो रज मम मस्तक चढ़ौ,
 भूधर मांगै येह ॥ ते गुरु० ॥ १४ ॥

७८. पंचनमोकारमंत्रमाहात्म्यकी ढाल ।

श्रीगुरु शिक्षा देत हैं, सुनि प्रानी रे ! सुमर
 मंत्र नौकार, सीख सुनि प्रानी रे ! लोकोत्तम
 मंगल महा, सुनि प्रानी रे ! अशरन-जन-आधार,
 सीख सुनि प्रानी रे ! ॥ १ ॥ प्राकृत रूप अ-
 नादि है, सुनि प्रानी रे ! मित अच्छर पैंतीस,
 सीख सुनि प्रानी रे ! पाप जाय सब जापतैं,
 सुनि प्रानी रे ! भाष्यो गणधरईश, सीख सुनि
 प्रानी रे ! ॥ २ ॥ मन पवित्र करि मंत्रको, सुनि
 प्रानी रे ! सुमरै शंका छोरि, सीख सुनि प्रानी
 रे ! वांछित वर पावै सही, सुनि प्रानी रे !

शीलवंत नर नारि, सीख सुनि प्रानी रे ! ॥ ३ ॥
विषधर-बाध न भय करै, सुनि प्रानी रे ! विनसै
विघन अनेक, सीख सुनि प्रानी रे ! व्याधि वि-
षम-विंतर भजै, सुनि प्रानी रे ! विपत न व्यापै
एक, सीख सुनि प्रानी रे ! ॥ ४ ॥ कपिको शि-
खरसमेदपै, सुनि प्रानी रे ! मंत्र दियो मुनिराज,
सीख सुनि प्रानी रे ! होय अमर नर शिव वस्यो,
सुनि प्रानी रे ! धरि चौथी परजाय, साख सुनि
प्रानी रे ! ॥ ५ ॥ कह्यो पदमरुचि सेठने, सुनि
प्रानी रे ! सुन्यो बैलकें जांव, सीख सुनि प्रानी
रे ! नर सुस्के सुख भुंजकै, सुनि प्रानी रे ! भयो
राव सुग्रीव, साख सुनि प्रानी रे ! ॥ ६ ॥ दोनों
मंत्र सुलोचना, सुनि प्रानी रे ! विंध्यश्रीको जोड़,
सीख सुनि प्रानी रे ! गंगादेवा अवतरी, सुनि
प्रानी रे ! सर्प-डसी थी सोइ, सीख सुनि प्रानी
रे ! ॥ ७ ॥ चारुदत्तपै वनिकने, सुनि प्रानी रे !
पायो कूपमँझा, सीख सुनि प्रानी रे ! पर्वत ऊ-
पर छांगने, सुनि प्रानी रे ! भये जुगम सुर सार,

१ बकरेने ।

सीख सुनि प्रानी रे ! ॥ ८ ॥ नाग नागिनी
 जलत हैं, सुनि प्रानी रे ! देखे पासजिनिंद,
 सीख सुनि प्रानी रे ! मंत्र देत तब ही भये, सुनि
 प्रानी रे ! परमावति धरनेंद्र, सीख सुनि प्रानी
 रे ! ॥ ९ ॥ चंहलेमें हथिनी फँसी, सुनि प्रानी
 रे ! खग कीनों उपगार, सीख सुनि प्रानी रे !
 भव लहिकै सीता भई, सुनि प्रानी रे ! परम
 सती संसार, सीख सुनि प्रानी रे ! ॥ १० ॥
 जल मांगै शूली चढ्यो, सुनि प्रानी रे ! चोर
 कंठ-गत-प्राण, सीख सुनि प्रानी रे ! मंत्र सि-
 खायो सेठने, सुनि प्रानी रे ! लह्यो सुरग सुख-
 थान, सीख सुनि प्रानी रे ! ॥ ११ ॥ चंपापुरमें
 ग्वालिया, सुनि प्रानी रे ! घोखै मंत्र महान,
 सीख सुनि प्रानी रे ! सेठ सुदर्शन अवतर्यो,
 सुनि प्रानी रे ! पहले भव निरवान, सीख सुनि
 प्रानी रे ! ॥ १२ ॥ मंत्र महातमकी कथा, सुनि
 प्रानी रे ! नामसूचना एह, सीख सुनि प्रानी रे !
 श्रीपुन्यास्रवग्रंथमें, सुनि प्रानी रे ! तारे सो सुनि

१ कीचड़में । २ विद्याधरने ।

५ भाग ३

लेहु, सीख सुनि प्रानी रे ! ॥ १३ ॥ सात-विसन
 सेवन हठी, सुनि प्रानी रे ! अधम अंजना चोर,
 सीख सुनि प्रानी रे ! सरधा करते मंत्रकी, सुनि
 प्रानी रे ! सीझी विद्या जोर, सीख सुनि प्रानी रे !
 ॥ १४ ॥ जीवक सेठ समोधियो, सुनि प्रानी रे !
 पापाचारी खान, सीख सुनि प्रानी रे ! मंत्र प्रतापें
 पाइयो, सुनि प्रानी रे ! सुंदर सुरग विमान, सीख
 सुनि प्रानी रे ! ॥ १५ ॥ आगें सीझे सीझि है, सुनि
 प्रानी रे ! अब सीझैं निरधार, सीख सुनि प्रानी
 रे ! तिनके नाम बखानतैं, सुनि प्रानी रे ! कोई
 न पावै पार, सीख सुनि प्रानी रे ! ॥ १६ ॥ बैठत
 चितैं सोवतैं, सुनि प्रानी रे ! आदि अंतलों धीर,
 सीख सुनि प्रानी रे ! इस अपराजित मंत्रको,
 सुनि प्रानी रे ! मति बिसरै हो ! वीर, सीख सुनि
 प्रानी रे ! ॥ १७ ॥ सकल लोक सब कालमें, सुनि
 प्रानी रे ! सरवागममें सार, सीख सुनि प्रानी रे !
 भूधर कबहुं न भूलि है, सुनि प्रानी रे ! मंत्रराज
 मन धार, सीख सुनि प्रानी रे ! ॥ १८ ॥

१ जीवंधरने ।

७९. करुणाष्टक ।

करुणा ल्यो जिनराज हमारी, करुणा ल्यो ॥
 टेक ॥ अहो जगतगुरु जगपती, परमानंदनिधान ।
 किंकरपर कीजे दया, दीजे अविचल थान ॥
 हमारी० ॥ १ ॥ भवदुखसों भयभीत हों, शिवपदवांछा सार ।
 करो दया मुझ दीनपै, भवबंधन निरवार ॥ हमारी० ॥ २ ॥ पखो विषम भवकूपमें, हे प्रभु !
 काढ़ो मोहि । पतितउधारण हो तुम्हीं, फिर फिर विनऊं तोहि ॥ हमारी० ॥ ३ ॥ तुम प्रभु परमदयाल हो,
 अशरणके आधार । मोहि दुष्टदुखदेत हैं, तुमसों करहुँ पुकार ॥ हमारी० ॥ ४ ॥ दुःखित देखि दया करै,
 गाँवपती इक होय । तुम त्रिभुवनपति कर्मतैं, क्यों न छुड़ावो मोय ॥ हमारी० ॥ ५ ॥
 भव-आताप तबै भुजैं, जब राखों उर धोय । दया-सुधा करि सीयरा, तुम पदपंकज दोय ॥
 हमारी० ॥ ६ ॥ येहि एक मुझ वीनती, स्वामी ! हंर संसार । बहुत धज्यो हूं त्रासतैं,
 विलख्यो वारंवार ॥ हमारी० ॥ ७ ॥ पदमनंदिको

१ श्रीपद्मनन्दिआचार्यकृत पंचविंशतिकाके करुणाष्टकका आशय लेकर ।

अर्थ लैं, अरज करी हितकाज । शरणागत
भूधरतणी, राखौ जगपति लाज ॥ हमारी० ॥८॥

८०. गजल ।

रखता नहीं तनकी खबर, अनहद बाजा बा-
जिया । घटबीच मंडल बाजता, बाहिर सुना तो क्या
हुआ ॥ १ ॥ जोगी तो जंगम सेवड़ा, बहु लाल
कपड़े पहिरता । उस रंगसे महरम नहीं, कपड़े रंगे
तो क्या हुआ ॥ २ ॥ काजी किताबैं खोलता,
नसीहत बतावै औरको । अपना अमल कीन्हा
नहीं, कामिल हुआ तो क्या हुआ ॥ ३ ॥ पोथीके
पाना बांचता, घरघर कथा कहता फिरै । निज
ब्रह्मको चीन्हा नहीं, ब्राह्मण हुआ तो क्या हुआ
॥ ४ ॥ गांजारुभांग अफीम है, दारू शराबा पो-
शता । प्याला न पीयाप्रेमका, अमली हुआ तो
क्या हुआ ॥ ५ ॥ शतरंज चौपरगंजफा, बहु
मर्द खेलै हैं सभी । बाजी न खेली प्रेमकी, ज्वारी
हुआ तो क्या हुआ ॥ ६ ॥ भूधर बनाई वीनती,
श्रोता सुनो सब कान दे । गुरुका वचन माना
नहीं, श्रोता हुआ तो क्या हुआ ॥ ७ ॥

RT

DETAILED INFORMATION.

INVESTA



ELITEX
textile machines
UNIPLET
knitting machines
LADA
household sewing machines
MINERVA
industrial sewing machines
SVIT
shoe-making and leather-dressing machines
Z.K.L.
bearings

DO YOU WANT TO MODERNISE